ISSN 2277-7660

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

अमर ज्योति

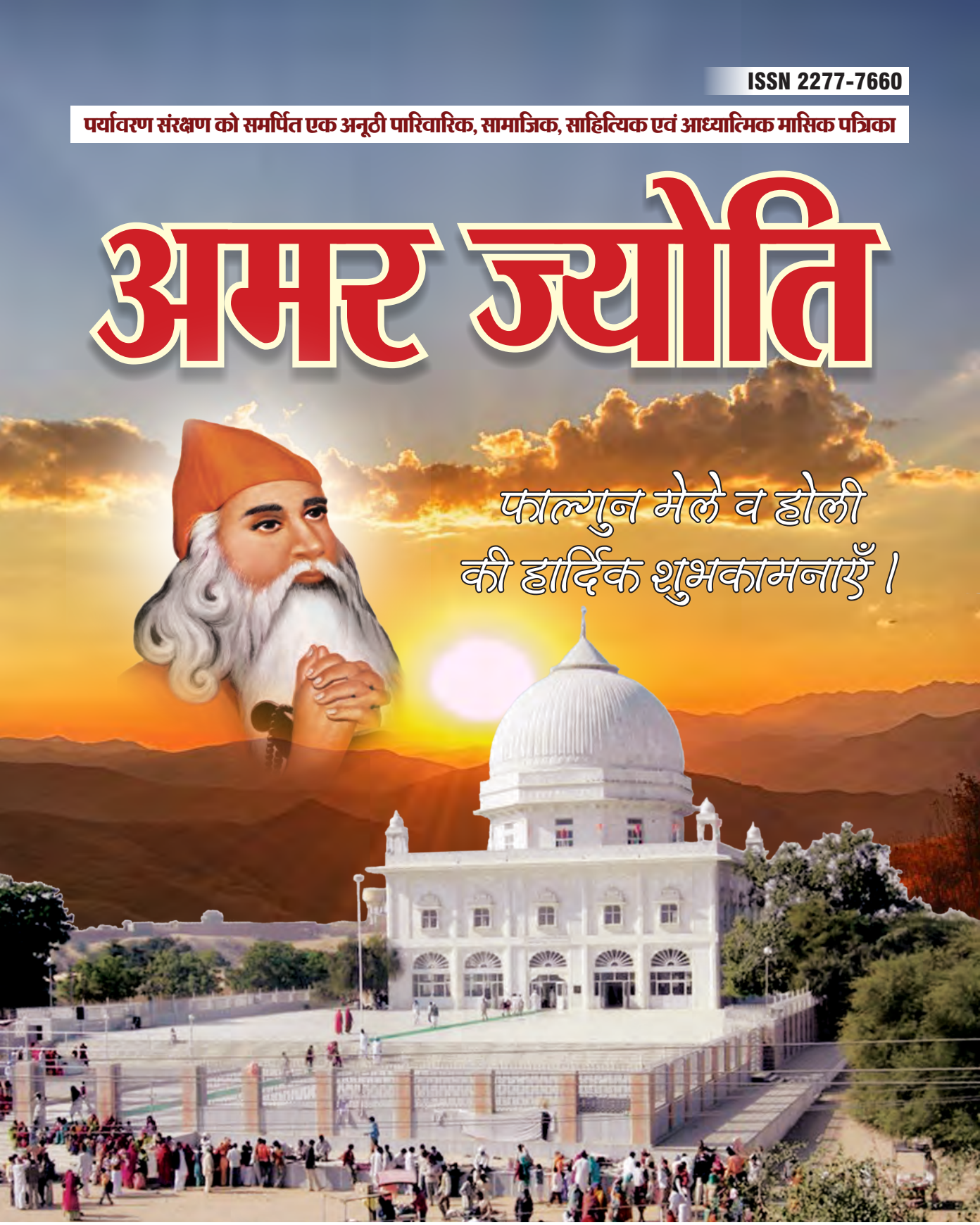

वर्ष: 70 मार्च, 2019 अंक: 03

भगवान् नरसिंह अवतार

प्रकाशक :
बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक
डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

सह संपादिका
श्रीमती अनिला बिश्नोई

कार्यालय पता :
'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125 001 (हरियाणा)
दूरभाष : 8059027929
email: editor@amarjyotipatrika.com,
Website : www.amarjyotipatrika.com

सभा कार्यालय दूरभाष :
फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

सदस्यता शुल्क :
वार्षिक : ₹ 100
25 वर्ष : ₹ 1000

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें"

'अमर ज्योति' का ज्ञान दीप अपने घर आँगन में जलाइये।

विषय अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सबद-81	4
सम्पादकीय	6
साखी	7
प्रह्लाद चरित: विविध आयाम	9
राजवर्ग और गुरु जाम्भोजी	14
जाम्भाणी संत साहित्य और सार्वभौमिक मानव मूल्य	18
प्रभु की प्राप्ति किसे होती है?	20
होली आई है..., देखे-देखो होली आई	21
जाम्भाणी हरजस	22
बिश्नोई लोकगीत	23
लिछमणरामजी सियोल: व्यक्तित्व एवं कृतित्व	24
प्राचीनकाल की प्रसिद्ध विदुषी नारियाँ	26
मुट्ठी में है लाल गुलाल	30
सहज जीवन की अभिव्यक्ति : जाम्भाणी साहित्य	31
सोशल मीडिया बना मददगार	33
धरती पर आसन्न संकट का द्योतक बदलता मौसम	35
अ.भा. सेवक दल का हीरक जयंती समारोह: एक झलक	37
गोवा में गुरु जाम्भोजी पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित	39

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

सबद-81

दोहा

इक साध चल्यो परदेश तै, बूझ बिकाणूं देश।
गांव धूपालिये में ही, आय कियो प्रवेश।

अरिल

विश्नोयण बूझै साध चला किस काम कूं।
देव तणों दीदार चला हरि धाम कूं।
देव नहीं रे बीर पाखण्डी है खरा।
पर हां कलपन लागा साध, सकल तन थर हरा।
देव दुवागर भेजियो, साधु तुरंत बुलायो।
साथरी आयो हजूर, देवजी पगे लगायो।
सतगुरु बूझे बात, साध कैसे कलपियो।
हरि हां पाखण्डी सुणियो, कान तब मन झलपियो।

एक सज्जन पुरुष ने जम्भेश्वर जी की महिमा सुनी। तब उसके मन में दर्शन करने की लालसा जागृत हुई। वह वहाँ से चलकर पूछते-पूछते धूपालिये में पहुँचा जो सम्भराथल के अति निकट है। वहाँ पर किसी बिश्नोई के घर पर पहुँचा, भोजन किया तब उस गृहिणी ने पूछा-हे साधु भाई! तुम कहाँ जा रहे हो? तब उस महात्मा ने कहा कि मैं बहुत दूर देश से चलकर आया हूँ और अब आगे सम्भराथल सिद्ध महापुरुष जाम्भोजी के निकट जा रहा हूँ। तब उस स्त्री ने कहा- हे भाई! तुझे किसी ने धोखा दिया है, वह देव नहीं है, बल्कि पक्का पाखण्डी है। यह बात तो उस स्त्री ने यह जानने के लिये कही थी कि यह वास्तव में कितना पक्का या कच्चा श्रद्धालु है। किन्तु उस स्त्री की बात को सुनकर वह साधु वहीं पर दु:खी होकर रोने लगा,

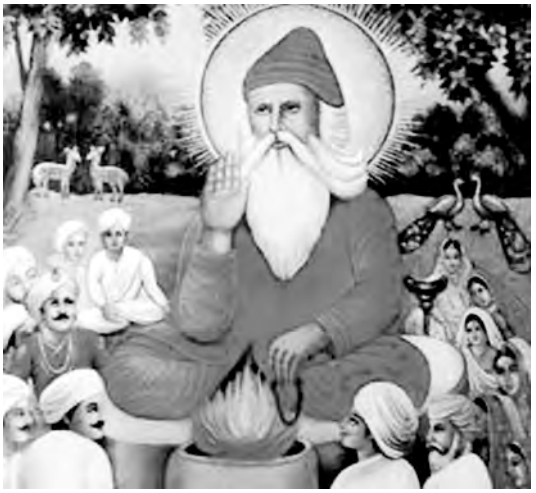

कांपते हुए पछतावा करने लगा कि मैं इतनी दूर से परिश्रम करके आया हूँ। किन्तु मेरे साथ धोखा हो गया। इस बात को जम्भदेवजी ने सम्भराथल पर विराजमान रहते हुए जान लिया और अपने एक शिष्य को भेजकर उस साधु को अपने पास बुलाया तथा उनसे पूछा तो उसने अपने दु:ख की बात सुनायी और कहा कि मैं तो बहुत बड़ी भावना लेकर आया था, किन्तु इस धूंपालिये गाँव में मेरी श्रद्धा टूट चुकी है। तब श्री देवजी ने उनके प्रति सबद सुनाया-

सबद-81

भल पाखण्डी पाखण्ड मंडा, पहला पाप पराछत खंडा।

भावार्थ- हे साधु! उस महिला ने जो कुछ भी कहा वह ठीक ही कह रही थी। मैं बहुत बड़ा पाखण्डी हूँ, मैंने यहां पर पाखण्ड रच रखा है जो कोई भी मेरे पास में आता है, मैं उनके संचित तथा क्रियमाण सभी पापों का खण्डन कर देता हूँ। पापों की बड़ी सेना को पराजित करना मेरा कर्त्तव्य है। यही बात जम्भसार में कही गई है-

चौपाई

कहै जम्भ जानै मोहे भेवों, ताका इतना धन ठग लेऊ।
काम क्रोध मद लोभ कुकर्मा, आत्म परचै विन सब धरमा।
ईरशा अन्याय रू निद्या, बांधे पाप पोट रज बिद्या।
इह धन हिन्दू मूसला प्यारो, लूट देय कर शब्द नगारो।
तातै मोसो मिलन कोई, जो मिल है सो निरधन होई।
जां पाखण्डी के नादे वेदे, शीले शब्दे बाजत पौण।
तां पाखण्डी ने चीन्हत कौण, जाकी सहजै चूकै आवा गौण।

जिस पाखण्डी ने यह पाप पराजित करने वाला पाखण्ड रचा गया है, उसके अपने कुछ निजी विशेष धर्म है। जैसे नाद ध्वनि का ज्ञाता होना, वेदों के सार रूप तथ्य का ज्ञाता व वक्ता होना, शीलव्रती होना, शब्द शास्त्र तथा अनहद नाद ओम का साधक होना ये सभी लक्षण बहुतायत से इस पाखण्डी में विद्यमान है। इन्हीं सद्गुणों की ही हवा यहाँ चल रही है अर्थात् मैंने ऐसा ही पवित्र वातावरण यहाँ पर निर्मित किया है जो भी इस पवित्र वातावरण में आयेगा तो वह पवित्र हुए बिना नहीं रह सकता। इस लक्षणों से युक्त पाखण्डी को कोई पहचान ले तो उसके सहज ही में जन्म मरण का चक्र छूट जायेगा। इसलिये हे साधु! तुमने इस रहस्यमय पाखण्डी को पहचाना नहीं था, इसलिये उदास होकर पछतावा कर रहा था। अब ऐसा नहीं होगा।

- साभार 'जंभसागर'

साखी प्रहलाद की

परम भगत पहलाद, हिरणाकुश दुख ही दियो।
घोल हलाहल जहर, उण पायो इण पी लीयो।
उण पायो इण पी लियो नै, महा विसन को नाम।
मुलताने मेलो मंड्यो नै, देखे सारो गांम।
दैतां कुल इचरज भयो, मार्यो मरे न बाल।
हिरणांकुश हिरदै डरै, आय गयो मुझ काल।
पुत्र नहीं कोई देव है।1।
फौजा लई बुलाय, मार मार मुख ओचरे।
तोपा दई झुकाय, ओला ज्यूं गोला पड़ै।
ओला ज्यूं गोला पड़ै नै, तीर तुपक तलवार।
परसी परघा मरगला, मुगदर करे ज बहुती मार।
छुरी कटारी गुपती चालै, लागै नहीं लिंगार।
हरि भक्तां रे संग रमै, जाणै नहीं गिंवार।
जाकै साची टेव है।2।
मरे नहीं पहलाद, हिरणाकुश हिरदै डरै।
गई भूख अरू पियास, रात दिन सांसो करै।
रात दिन सांसो करै नै, कोट चिण्यो कर रीस।
करोड़ साध किया केद में, तीना उपर तीस।
सो जोजन ऊंचो चिण्यो, अन जन कबहूं न दीस।
रवि दवादस गढ़ कांगरा, तपै जो विसवा वीस।
जाणै नहीं तहां भेव है।3।
हरि रा आडा हाथ, बादल नित बरषा करै।
छपन भोग तियार, रिधि सिधि साथे फिरै।
रिधि सिधि साथे फिरै नै, मेवा लिया मिष्ठान।
अन्न इच्छा लेवै नहीं पण, देवै करे गुण ज्ञान।
कुलफ खोय देखे दुष्ट, जब बीता बारा मास।
संता रे सुख अनन्त है, देख अरू भयो उदास।
सिधि करे सब सेव है।4।
खड़ग लिया उण हाथ, पांच करोड़ परलय किया।
पकड़ लियो पहलाद, संत सकल मन में डर्या।
संत सकल मन में डर्या नै, भागा आठ अरू बीस।
कंठ पकड़यो पहलाद को, कहां तेरो जगदीश।
मो तो खड़ग खंभ के मांहि, तब निकल्यो भभकार।
पकड़ पिछाड़ियो चौक में, जाणैं सब संसार।
साहब सतगुरु सेव है।5।

-साभार **साखी भावार्थ प्रकाश**

भक्ति एवं सत्य के प्रतीक 'भक्त प्रह्लाद'

भक्त प्रह्लाद केवल बिश्नोई पंथ के ही नहीं अपितु संपूर्ण भारतीय भक्ति परंपरा के आदर्श हैं। प्रह्लाद नास्तिकता पर आस्तिकता की, अन्याय पर न्याय की, अधर्म पर धर्म की, घृणा पर प्रेम की विजय के प्रतीक हैं। वे भारतीय संस्कृति के प्राण हैं। भक्ति का मार्ग सीधा सपाट न होकर अनेक अवरोधों से भरा हुआ होता है। आन्तरिक विकारों के साथ-साथ बाह्री अवरोध भी इस पथ के कंकड़ हैं। इस पथ पर चलते हुए कदम-कदम पर ठोकर खाने या रपटने का भय रहता है। यही कारण है कि इस पथ पर चलने वालों को भक्त कवियों ने शूरवीर कहा है। भक्ति मार्ग पर अग्रसर होना कायर का कार्य नहीं है क्योंकि इस राह के हर प्रह्लाद को पग-पग पर हिरण्यकश्यप मिलते हैं।

भक्त प्रह्लाद का उज्ज्वल चरित्र हमें यही सिखाता है कि भक्ति का मार्ग दृढ़ता की मांग करता है। लोभ, लालच, भय, दण्ड आपको डिगाने के लिए हर समय तत्पर रहते हैं। यदि इन सबसे टकराते हुए आप आगे आसुरी शक्तियों से संघर्ष आज हम सबके लिए एक प्रेरक उदाहरण बन चुका है। आज भी सज्जनों की राह निष्कंटक नहीं है। हमें प्रह्लाद से यह सीखना चाहिए कि विजय सदैव भगवद् भक्ति की ही होती है। यदि भावना निष्कलंक और सच्ची है तो परमात्मा को अवतार लेना ही पड़ेगा। प्रह्लाद के तैंतीस करोड़ अनुयायी हमें यही कह रहे हैं कि हमें सदैव सत्य का ही साथ देना चाहिए, भले ही मृत्यु का सामना करना पड़े।

होली के त्यौहार का सबसे बड़ा संदेश भगवद् भक्ति का है। प्रह्लाद के बचने की खुशी मनाने के साथ-साथ हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम पूर्ण समर्पण के साथ उसी राह पर चलेंगे जिस राह पर चलकर भक्त प्रह्लाद स्वयं मोक्षगामी हुए और तैंतीस करोड़ भक्तों का भी उद्धार किया। खेद है कि आज हम होली के इस अति पवित्र और गंभीर अर्थ को भूलकर होली को केवल हुड़दंग का त्यौहार मान बैठे हैं। होली के अवसर पर एक दूसरे पर कीचड़ फेंकने और शराब पीने का होली से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह तो आसुरी प्रवृत्ति का प्रतीक है। फाग के दिन रंग लगाकर आपसी प्रेम और भाइचारे का प्रदर्शन भी अपनी जगह है। पर इस त्यौहार का मूल संदेश तो भगवान विष्णु की दृढ़ भक्ति ही है जिसे हमें हृदय से आत्मसात करना चाहिए।

साखी

सुरजनजी कृत साखी कणां की

जमैं आवो गुरु भाइयो, सुपह करौ जे काय।1।
ज्ञान श्रवणे सांभलो, शब्द सुणो चितलाय।2।
गुरु फुरमाई से करौ, कुपही करौ न काय।3।
दान दया जरणा जुगति, सत व्रत शील सभाय।4।
आठ धरम नवधा भगति, साध सेव सत भाय।5।
आचारे ब्रह्मा सही, जोग ज ध्यान दिढ़ाय।6।
आण तजो विष्णु भजो, पाप रसातलि जाय।7।
जिण ओ जीव सिरजियौ, सो सतगुरु सुरराय।8।
जुगां जुगां जीवै जको, अवगति अकल ज थाय।9।
मात पिता जाकै नहीं, पख परवार न थाय।10।
जोत सरूपी जग थई, सरवै रह्यो समाय।11।
अटल इडग एक जोति है, ना कही आवै न जाय।12।
जन सुरजन वा परसिया, आवागुवण न थाय।13।

भावार्थ- हे गुरु भाइयों! आप और हम एक ही गुरु के शिष्य होने से गुरु भाई हैं। सभी का एक ही धर्म-कर्म एवं व्यवहार है। इसलिये हे भाई! आप लोग जम्मा जागरण जहां पर सत्संग होता है, सत्य असत्य का विवेक होता है ऐसी जगह पर आप क्यों नहीं जाते। वहां जाकर अपने जीवन का लक्ष्य मार्ग स्वयं ही निर्धारित करें। यही जीवन में शुभ मार्ग एवं कर्म होगा।1। कानों द्वारा मन लगाकर जागरण में ज्ञान श्रवण करें तथा गुरुदेव के बताये हुए शब्दों को ग्रहण करें। ये विद्या जागरण में ही मिल सकती है तथा सभी के हितकारी है।2। जैसा गुरुदेव ने फरमाया है वैसा ही करें। पाप कर्म कभी न करें तथा कुमार्ग पर कभी न चलें। यही शिक्षा जागरण में आकर ग्रहण करें।3। आगे कवि बतला रहे है कि जागरण में हमें आठ प्रकार के धर्म अंगों को सीखना है तथा उन्हें धारण करके पूर्ण धार्मिक होना है। आठ धर्म के अंग ही धर्म कहलाते है। सर्व प्रथम दान आता है। दान का अर्थ देना है। मानव का कर्त्तव्य है कि वह अपनी कमाई से दसवां भाग धार्मिक कार्य में सुपात्र को देता रहे उससे धन शुद्ध होता है। कहा भी है-थोड़े मांही थोड़ेरो दीजै, होते नांह न कीजै। दूसरा धर्म बतलाया है कि महापुरूषों ने दया को ही धर्म का मूल बताया है। ''दया धर्म का मूल है पाप मूल अभिमान'' दीन दु:खी पर करुणा करके उसकी हर प्रकार से रक्षा करना ही दया कहलाती है। तीसरा धर्म जरणा बतलाया है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, इर्ष्या आदि सदैव हमें जलाती रहती है। किन्तु अवसर पाकर हम उन्हें जला दें। कहा भी है-''देख्या अदेख्या, सुण्या असुण्या क्षमा रूप तप कीजै, जरिये जरणी करिये करणी, यही जरणा है चौथा धर्म जुगति बतलाया है जिसे गीता में युक्ताहार विहार से कहा गया है। आहार-विहार आदि सभी युक्तिपूर्वक करना ही जीवन जीने का सुलभ उपाय बतलाया है। पांचवां धर्म

सत्य बतलाया है। ''सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्'' सत्य बोलें परन्तु प्रिय भी बोलें। यदि सत्य है किन्तु प्रिय नहीं है तो ऐसी वाणी कदापि न बोलें। सत्य ही परमात्मा है सत्य ही आत्मा है जगत प्रपंच झूठा है। सत्य को सत्य से मिलाना ही धर्म है। छठा धर्म व्रत है। वेद विहित तथा गुरु के द्वारा बताया हुआ अमावस्यादि व्रत करना ही सत्य व्रत कहलाता है। कहा भी है कि ''अमावस्या का व्रत राखणों'' व्रत का अर्थ होता है सत्य प्रतिज्ञ होना। सातवां धर्म शील कहा गया है। शील शब्द बहुत ही गंभीर अर्थ को समेटे हुए है।

शील का अर्थ ब्रह्मचर्य की रक्षा करना भी है। पराई स्त्री को मां-बहन सदृश देखना, नम्रता का व्यवहार करना, स्वभाव से ही शीतल सौम्य सज्जन होना ये सभी अर्थ शील के अन्तर्गत आ जाते है। आठवां धर्म यहां पर स्वाभाविक रूप से आये हुए दुर्गुणों को खोज करके बाहर निकालना है। किसी दुर्जन की संगति से या अन्य कारणों से दुर्गुण आ जाते हैं। जैसे- चोरी, नशा, कठोरता, क्रूरता, नीचता, धोखाधड़ी करना इत्यादि। इन सभी आदतों को त्याग करके इनके विपरीत सद्गुणों को धारण करना ही आठवां धर्म है। अब आगे नवधा भक्ति बतलाते है। नवधा भक्ति की व्याख्या तुलसी रामायण के अनुसार की जाती है।

चौपाई

नवधा भक्ति कहौ तोहि पाहि, सावधान सुनु धरू मन मांहि।
प्रथम भक्ति संतन्ह कर संगा, दूसरी रति मम कथा प्रसंगा।8।

दोहा

गुरु पद पंकज सेवा, तीसरी भक्ति अमान।
चौथी भगति मम गुन गन, करइ कपट तजि गान।

चौपाई

मंत्र जाप मम दृढ़ विश्वासा, पंचम भजन से वेद प्रकाशा।1।
छठ दम सील बिरति बहु कर्मा, निरत निरंतर सज्जन धर्मा।2।
सातव सम मोहि मय जग देखा, मोते संत अधिक कर लेखा।3।
आठव जथा लाभ संतोषा, सपनेहुं नहिं देखई पर दोषा।4।
नवम सरल सब छल हीना, मम भरोस हिय हरष न दीना।5।
नव महुए को जिन्ह के होई, नारि पुरुष स चराचर कोई।6।

इस प्रकार से नवधा भक्ति श्री रामचन्द्र जी ने शबरी के प्रति बतलाई थी। कुछ लोग केवल ब्रह्मज्ञान की बात ही करते है, किन्तु कवि कहता है कि यह ब्रह्मज्ञान केवल कहने और सुनने की ही बात नहीं है, वह तो आचरण में लाया जाता है तभी वह ब्रह्मज्ञान है। अन्यथा तो केवल गाल बजाना ही है। ब्रह्मज्ञान को आचरण में लाने के लिये योग द्वारा ध्यान दृढ़ करना होगा, तभी उस महारस का अनुभव हो सकेगा।6। हे गुरु भाइयों! जैसे गुरु देव ने कहा है- 'विष्णु-विष्णु तूं भण रे प्राणी' उसी बात को मैं आपसे कह रहा हूं कि आन देव यानि भूत प्रेत चौसठ योगिनी, बावन भैरूं आदि देवता कहे जाने वाले तथा कथित जन्मे हुए जीवों को छोड़कर एक ईश्वर विष्णु का ही भजन स्मरण करो। जिससे तुम्हारे पाप रसातल में चले जायेंगे।7। जिस परमात्मा विष्णु ने इस जीव के लिये यह दिव्य देह रची है वही तो सिरजनहार यहां सम्भराथल पर विराजमान है जो सतगुरु रूप से आकर उपदेश दे रहे हैं।8। वह परमात्मा विष्णु तो युगों-युगों तक जीवित रहने वाले तथा उनकी गति कार्य चरित्र के बारे में थाह नहीं पाया जा सकता, बुद्धि की दौड़ वहां तक नहीं पहुंच सकती।9। वह विष्णु स्वयं सृजनहार है, परन्तु उनके माता-पिता, भाई-बहन आदि परिवार नहीं है क्योंकि वे स्वयं ज्योति स्वरूपी हैं। सम्पूर्ण जगत में कण-कण में समाये हुए हैं।11। वही विष्णु ही सम्भराथल पर स्थित होकर अटल अडिग हो चुके है। इस समय कहीं आते-जाते नहीं है कहा भी है- 'अडिग ज्योति सम्भराथले' यानि मेरी ज्योति सम्भराथल पर अडिग रहेगी, भूल नहीं जाना। यदि भूल गये तो निश्चित ही दोहरे दु:ख में गिर जाओगे।12। सुरजन जी कहते हैं कि जिसने भी सम्भराथल पर आकर दर्शन स्पर्श ज्ञान श्रवण किया है वह तो निश्चित ही संसार के आवागवण से छूट जायेगा।

साभार- **साखी भावार्थ प्रकाश**

प्रह्लाद चरितः विविध आयाम

जब किसी अलौकिक विभूति का व्यक्तित्व धरती पर अपनी लीला करता है तो उसका सर्वहितकारी स्वभाव सबको प्रिय लगता है। सब उसे अपने से लगते हैं और सबको वह अपना सा लगता है। प्रह्लाद ने चराचर जगत में भगवान को देखा तो सब जगह भगवान उनकी रक्षा के लिए तैयार मिले। प्रह्लाद का जन्म सतयुग में हुआ और अब चौथा युग कलयुग चल रहा है। इतना समय बीतने के बाद भी भारतीय जनमानस में प्रह्लाद आज भी तरोताजा है। संत, भक्त कवियों ने प्रह्लाद पर रचनाएं लिखी तो इतिहासविदों ने प्रह्लाद के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला। जन साधारण में यह मान्यता है कि प्रह्लाद का जन्म मुल्तान में हुआ था, जो अब पाकिस्तान में है और वहीं पर प्रह्लाद की रक्षा के लिए नरसिंह भगवान का प्राकट्य हुआ था। देश विभाजन से पूर्व मुल्तान में एक भव्य नरसिंह धाम था, जिसकी कथा सुनाते हुए मलूक पीठाधीश्वर द्वारा आचार्य स्वामी राजेन्द्रदासजी महाराज कहते हैं कि नरसिंह भगवान के प्राकट्य स्थल मुल्तान में एक बार बैशाख शुक्ल चतुर्दशी को भगवान नरसिंह का प्राकट्य उत्सव मनाया जा रहा था, उस समय द्वितीय विश्व युद्ध चल रहा था और ब्रिटेन समेत सभी धुरी राष्ट्र जर्मनी के नेतृत्व वाले मित्र राष्ट्रों से जूझ रहे थे। भारत में सभी जगह धारा 144 लगाई हुई थी, जिसमें एक जगह इकट्ठा होना और जलसा, जुलूस और उत्सव करना प्रतिबंधित था। उस समय अंग्रेज युद्ध जीत गए थे, परन्तु धारा अभी तक लगी हुई थी। किसी ने अंग्रेजी शासन को समाचार दिया कि नरसिंह धाम में बहुत बड़ा उत्सव मनाया जा रहा है जिसमें हजारों लोग एकत्रित हैं। अंग्रेज अधिकारी बहुत बड़ी फौज लेकर आया और वहां के महंत स्वामी नारायणदास जी महाराज को कानून तोड़ने का कारण पूछा और कड़ी सजा देने के लिए तत्पर हुआ तो महाराज जी ने मौके की नजाकत को भांपते हुए नीति निपुणता से शब्दों को गोल-मोल करते हुए कहा कि सरकार का विजय उत्सव मनाया जा रहा है। महाराज जी ने तो भगवान नरसिंह (सरकार) के हिरण्यकशिपु पर विजय प्राप्त करने का उत्सव का कहा था, परन्तु अधिकारी ने समझा कि अंग्रेजी सरकार का विजय उत्सव इतने धूमधाम से मनाया जा रहा है। वह बड़ा खुश हुआ, बात ऊपर तक पहुँची और ईनाम के रूप में महाराज जी को मुल्तान का चेयरमैन बना दिया और उनको लिखित में यह पावर दी कि आवश्यकता पड़ने पर आपको फौज सहित हर प्रकार की सहायता उपलब्ध करवाई जाएगी। बंटवारे से तुरंत पहले महाराज जी ने फिर नीति निपुणता का परिचय दिया और वह अधिकार-पत्र सरकार के समक्ष उपस्थित करते हुए कहा कि अब देश के हालात ठीक नहीं हैं। देश का बंटवारा अवश्यंभावी है और इसलिए हम चाहते हैं कि नरसिंह भगवान का श्रीविग्रह, नरसिंह धाम की सचल संपत्ति, साधु-संतों को फौज की गाड़ियों में भरकर हरिद्वार पहुंचाया जाए और मुल्तान के नरसिंह धाम की जितनी भूमि है उतनी ही हरिद्वार में उपलब्ध करवाई जाए। अर्जी पर तुरंत अमल हुआ और जैसा महंत नारायणदासजी चाहते थे, अंग्रेजी सरकार ने वैसा ही प्रबंध किया।

इससे इस बात को पुष्टि प्राप्त होती है कि नरसिंह भगवान मुल्तान में ही प्रकट हुए थे और प्रह्लाद का नगर मुल्तान ही था।

जाम्भाणी साहित्य में भी मुल्तान को प्रह्लाद का नगर बताया है-

महे उपरि हुंता भल धारी, असुर नुवाया आंणो।
हीरणाकस हुकमी हुवो, मुल्य तप मुलताणो।
-केसोजी गोदारा कृत प्रह्लाद चरित -(130)

हीरणोकस करि हुंस, उरे मांहे आणंद कर।
गढ़ मांहे मुलताण, उर लीयायो ओझणौ।
(वही -167)

सह साध मील्या मुलतांण सतु।
(वही-526)

सुदि बेसाखे चत्रदसी, चंद्रावति हरे वंस वेचारे।
अमर तेज गुर मुलतांण खेत,नारिस्यंघ अवतार।
(वही - 586)

परम भक्त पहलाद, हिरणाकुश दुख ही दियो।

घोल हलाहल जहर, उण पायो इण पी लीयो।
उण पायो इण पी लियो नै, महा विसनु को नाम।
मुलताने मेलो मंडयो नै, देखे सारो गांम।
-(साखी-साहबरामजी राहड़)

नरसिंह नर मुल्तान, सतयुग में साको कियो।
मारयो दैत दीवान, पहलाद भक्त गोदी लियो।
-(साखी-साहबरामजी राहड़)

उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड में इससे इतर मान्यता है, इसका भी उल्लेख करना यहां समीचीन है। एक खबर के अनुसार हिरण्यकश्यप के राज्य की राजधानी बुंदेलखंड के एरच कस्बे में कोई भी उसका (हिरण्यकश्यप) नामलेवा नहीं है, लेकिन उसके बेटे भक्त प्रह्लाद की न केवल जय-जयकार होती है, बल्कि उसकी पूजा तक की जाती है। एरच कस्बे में ही हिरण्यकश्यप की बहन होलिका प्रह्लाद को जलाने की कोशिश में स्वयं जल गई थी, तभी से पूरी दुनिया में होली का त्योहार मनाया जाने लगा।

बुंदेलखंड के ऐतिहासिक नगर झांसी से लगभग 70 किलोमीटर दूर बसा है एरच कस्बा। इस कस्बे का राजा हिरण्यकश्यप खुद को भगवान मानता था और उसके घर प्रह्लाद जैसा बेटा हुआ, जो विष्णु भक्त था। ईश्वर भक्ति ने ही प्रह्लाद को पिता हिरण्यकश्यप का बैरी बना दिया था। धार्मिक ग्रंथ इस बात की गवाही देते हैं कि हिरण्यकश्यप ने प्रह्लाद को मारने के लिए उसे नदी में फेंका, सांपों से कटवाया, मगर उसका कुछ नहीं हुआ।

धार्मिक ग्रथों से पता चलता है कि हिरण्यकश्यप को वरदान था कि उसे न नर मार सकेगा, न जानवर, न वह दिन में मरेगा और न रात में, इतना ही नहीं वह घर के भीतर तथा बाहर भी नहीं मरेगा। इसीलिए विष्णु भगवान को नरसिंह का अवतार लेना पड़ा था। प्रह्लाद को जब हिरण्यकश्यप मारने में सफल नहीं हुआ तो उसने अपनी बहन होलिका का सहारा लिया।

होलिका को वरदान था कि वह आग में नहीं जलेगी। प्रह्लाद को मारने के लिए रची गई साजिश के मुताबिक बेतवा नदी के किनारे स्थित डीकान्चल पर्वत पर एक समारोह का आयोजन किया गया। इसमें तय हुआ कि होलिका नाचते-नाचते प्रह्लाद को गोदी में लेकर आग में बैठ जाएगी जिसमें प्रह्लाद जल जाएगा, मगर प्रह्लाद को जलाने की कोशिश में खुद होलिका जल गई और प्रह्लाद बच गया।

बुदेलखंड की संस्कृति के जानकार हरगोविंद कुशवाहा धार्मिक ग्रंथों का हवाला देते हुए बताते हैं कि होलिका के जल जाने की खबर मिलते ही हिरण्यकश्यप बौखला गया और उसने प्रह्लाद को मारने की कोशिश की। प्रह्लाद की रक्षा को भगवान नरसिंह के अवतार में प्रकट हुए और हिरण्यकश्यप को मार डाला। उसके बाद प्रह्लाद को राजगद्दी सौंपी गई, मगर दानवों ने उसे राजा नहीं माना क्योंकि वह अपने पिता का कातिल था।

वे आगे बताते हैं कि भगवान विष्णु ने दानवों और देवताओं की एरच के पास डीकांचल पर्वत के करीब पंचायत कराई। इस पंचायत में विष्णु जी ने प्रह्लाद को अपना बेटा स्वीकारा। इस पंचायत के बाद सभी ने एक दूसरे को गुलाल लगाई, तभी से होली मनाई जाने लगी जिस दिन यह पंचायत थी उस दिन पंचमी थी।

एरच में खुदाई के दौरान एक ऐसी मूर्ति भी मिली है जिसमें प्रह्लाद को गोदी में लिए होलिका को दिखाया गया है। इसके अलावा हिरण्यकश्यप काल की शिलाएं भी मिली है। एरच में कई ऐसे मंदिर हैं जिनमें प्रह्लाद की मूर्तियां स्थापित हैं और यहां के लोग उनकी पूजा करते हैं।

एरच के लोगों को इस बात का गर्व है कि प्रह्लाद जैसा व्यक्ति उनके इलाके में जन्मा और आज पूरी दुनिया उस पर नाज करती हैं। गांव के लोग अपने बेटों के नाम प्रह्लाद तो रखते हैं मगर उसके पिता हिरण्यकश्यप और बुआ होलिका को कोई याद नहीं करना चाहता। इतना ही नहीं यहां प्रह्लाद की जय-जयकार भी होती है। वहीं हिरण्यकश्यप के काल की यादों को भुला देना चाहते हैं। इसका प्रमाण है हिरण्यकश्यप का खंडहर में बदलता किला।

एरच में भी दुनिया के अन्य स्थानों की तरह होलिका दहन की तैयारी जोरों से चल रही है, यहां होलिका दहन हिरण्यकश्यप के खंडहर में बदल रहे किले के सामने किया जाएगा, जहां वर्षों से होलिका दहन होता आया है।

शास्त्रों और लोकमान्यताओं ने प्रह्लाद का चरित्र विभिन्न रूपों में प्रकट किया, वहीं संत भक्त कवियों ने

भी प्रह्लाद को अपनी भावांजलि प्रदान की, जिनमें से कुछ रचनाएं प्रस्तुत हैं-

भक्त प्रह्लाद को बारामासियो।

श्रीनरहरि महाराज भक्त की सहाय करी छिन में ॥टेक ॥
जेठ मास चटसाल पढ़ने की कीनी है त्यारी।
संग सखा प्रह्लाद पधारे बात लगी प्यारी ॥
गुरुजी संथा समझावे।
सांडामर्क की बात कंवर के दाय नहीं आवे ॥
गुरुजी दुख पावे मन में ॥श्री० ॥1 ॥
साढ़ मास सांडामर्क राजा ने जाय कह्यो।
म्हारो वचन एक नहीं माने यो रस ओर भयो ॥
नग्र बालक समझावे।
निज कुल की मर्यादा छोड़ गुण गोविंद का गावे ॥
कहूं सो झूठ नहीं इसमें ॥श्री० ॥2 ॥
श्रावण मास शांत चित्त राजा, पूछे कुसलाता।
कहो पुत्र क्या क्या पढ़े हो, हमसे कहो बाता ॥
पिता से अरजी कर लीनी।
एक कृष्ण को ध्यान हमारे साँची कह दीनी ॥
सुनत ही बाण लग्यो तन में ॥श्री० ॥3 ॥
भादू मास असुर हिरणाकुश, सुत को समझावे।
राम कृष्ण की छोड़ जबानी, मोकूं नहिं भावे।
दैत्य सब कुल है हमारे।
इन्द्रासन ल्यूं खोस राम बिन क्या अटकी थारे ॥
विष्णु तो भीड़ी है मन में ॥श्री० ॥4 ॥
लागत मास आसोज, कंवर कर जोरे अरज करे।
जब लग घट में प्राण, राम हिरदा से नाहिं टरे ॥
करो कोई लाख जतन भारी।
वासुदेव भगवान भजन में सूरत लगी म्हारी ॥
कृपण को मन है ज्यूं धन में ॥श्री० ॥5 ॥
कातिक कोप कियो हिरणाकुश दैत्य ने हुकुम कियो।
जोजन सात शिखर पर चढ़कर, सुत को डार दियो ॥
विष्णुजी अब साय किजे।
भक्त प्रह्लाद कष्ट में आगे होय लीजे ॥
वसुधा उमंग चढ़ी घन में ॥श्री० ॥6 ॥
मंगसिर मास कंवर ने साँपां से डसवावे।
ईश्वर है भक्तां को सीरी, पल में आय बचावे ॥
प्रह्लाद ने जीतो देख मंत्री से सैन करे।
यो तो वैरी वण्यो हमारो, कुण प्रकार मरे ॥
त्रास भोत भारी मन में ॥श्री० ॥7 ॥
पौष मास में पिता पुत्र ने वैरी जाण लियो।
अज्ञा दई जल्लाद ने शूली पर टांग दियो ॥
धरणी पर गूंज पड़ी भारी।
तज सिंधु मर्याद शेष की कमर कसी न्यारी ॥
भगवान ध्यान धरै मन में ॥श्री० ॥8 ॥
माघ मास में हिरणाकुश के सोच पड़यो तो भारी।
दानव कुल पर संकट आयो, कैसे हो निसतारी ॥
भाई से होलका बतलावे।
मेरे पा शीतल चीर तूं क्यों घबरावे ॥
दुष्ट के खूब जची मन में ॥श्री० ॥9 ॥
फागण मास कंवरने लेकर होलका त्यार भई।
बैठ चिता के मांय अगन धधकाय दई ॥
भुवा की होगी राख, भक्त राम ने रटतो पायो।
वो परमेश्वर सदा सहायक, प्यादोहि दोड़ बचायो ॥
बिमान झुक रह्यो गगन में ॥श्री० ॥10 ॥
चौत मास हिरणाकुश बूझे, कठे सहायक तेरो।
काढ़ खड़ग सिर दूर करूं, अब दाव लग्यो मेरो ॥
दशूं दिशा में, तोमें, मोमें, खड़ग खंभ में व्यापे।
लख चौरासी चार कूंट में सूझत है आपे ॥
महिमा गाई वेदन में ॥श्री० ॥11 ॥
बैशाख मास खड़ग खंभा पर दे मारे।
खंभ फाड़ हिरणाकुश मारयो, नरहरि रूप धारे ॥
धर जंघन पर हाथ दुष्ट ने नखन से फाड़यो।
जै भई शुक्ल चौदस ने भक्त को कष्ट निवारयो ॥
पुष्प सुर बरसत है घन में ॥श्री० ॥12 ॥

-(अज्ञात कवि)

ब्रह्मचारीजी का भाव-

नरहरि कर परसत तुरत, झरत नयन ते नीर।
करन लगे प्रह्लादजी अस्तुति गिरा गभीर॥
जब परि जननी पै भीर तबहिं दुख टारे।
हे कृपानाथ! करुणेश! जगत रखवारे॥
नित सत्व-प्रकृति सुर तुमहिं रिझावै, ध्यावै।
अज-सिव-सनकादिक पार न पावै, गावै॥
हम नीच असुर अति क्रूर, अधम कहलावै।
क्यों करी कृपा शुभ दरशन दीन्हे प्यारे॥हे कृपा०॥
नहि कोई तुमकू तप प्रभाव तै पावैं।
यदि भक्त होय तो पशु ह्य पै ढुरि जावैं॥
हो भक्तहीन द्विज, नहिं तिन मख मह आवैं।
अगनित खल श्वपचहु भक्त भक्ति तें तारे॥हे कृपा०॥
जो जैसे तुमकू नरहरि भगवन! ध्यावै। वह तैसो दरशन नाथ! तुम्हारो पावै॥
ज्यों दरपन में प्रतिबिम्ब-स्वरुप लखावै।
ह्वै प्रकट खंभते मेटे दुख हमारे॥हे कृपा०॥
भक्तनि हित नित नव कच्छ-मच्छ वपु धारौ।
जो शत्रु भाव तै भजैं तिनहिं संहारौ॥
असुरनि कू दैकें मुक्ति सुरनि दुख टारो।
जग जीवनि हित अति मधुर चरित विस्तारे॥हे कृपा०॥
नित तुमरे चरितनि भक्त-जनन में गाऊँ।
नित रूप मनोहर तुमरो नरहरि! ध्याउँ॥
भव-तरनि चरन गहि नाथ! पार ह्वै पाऊँ।
है जग-जीवन अति सुखमय चरन तिहारे॥हे कृपा०॥
यह जीव जगत में तुमकौ तजि कै भटक्यो।
माया के फंदे फस्यो गुननि मह अटक्यो॥
चौरासी चक्कर माहि अविद्या पटक्यो।
हो तुम ही नरहरि केवल एक सहारे॥हे कृपा०॥
नहि उत्तम मध्यम अधम बुद्धि है तुमरी।
है तुमकू सृष्टि समान चराचर सबरी॥
हम काल-वयाल से डसे, लेउ सुधि हमरी।
ये काम-क्रोध-मद-लोभ-मोह अहि कारे॥हे कृपा०॥
यह मन मेरो है नरहरि! चंचल भारी।
नहिं सुनै तुम्हारी कथा सकल अघहारी॥
सौ दीन हीन अति छीन गंवार भिखारी।
हे नाथ लगाओ डूबत नाव किनारे॥हे कृपा०॥
है माया अपरम्पार तुम्हारी स्वामी।
कैसे पावे हम तुम्हें असुर खल कामी॥
हो घट-घट व्यापी प्रभुवर अन्तरयामी।
निगमागम सवरे नेति-नेति कहि हारे॥हे कृपा०॥
हे कृपानाथ! करुणेश! जगत रखवारे।
जब परि जननी पै भीर तबहि दुख टारे॥

-(श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी कृत 'श्रीभागवत चरित' से)

ब्रह्मलीन राजेश रामायणीजी-

(1)

सूर घनेरे फिरे अन्न मांगत,
ते पद सूर सो स्वाद कहां है।
करताल मंजीरा बजावती है,
मीरां मतवारी सी याद कहां है।
सीयराम कथा कितनों ने लिखी,
तुलसी सरसी मरजाद कहां है।
नरसिंह बसे प्रति खंभन में,
पर काडबे को प्रह्लाद कहां है।

(2)

बता भगवान कहाँ?
हर ठावं।
क्या खंभे में है?
हां।
भक्त की जहां हाँ,
भगवान है वहां।

प्रह्लाद ने भगवान से निष्काम भाव से प्रेम किया, उन्हें अपना माना, उनसे कभी कुछ नहीं चाहा। अपने कष्टों के निवारण के लिए कभी रोए नहीं, कभी दु:खी

होकर धैर्य नहीं खोया। प्रतिपल प्रत्येक विधान में अपने प्रभु की अहैतुकी कृपा का अनुभव ही किया।

उनका दृढ़ विश्वास था कि प्रभु अपने हैं, परम कृपालु हैं, सर्वसमर्थ हैं, सर्वज्ञ हैं और सर्वत्र हैं तो चिंता किस बात की। ऐसे अनन्य भक्त के लिए भगवान का हृदय भी द्रवित हो जाता है।

दैत्यराज हिरण्यकशिपु मारा गया, किंतु भगवान नरसिंह का क्रोध शांत नहीं हुआ। ये बार-बार गर्जना कर रहे थे। ब्रह्माजी, शंकरजी तथा दूसरे सभी देवताओं ने दूर से ही उनकी स्तुति की। पास आने का साहस तो भगवती लक्ष्मीजी भी ना कर सकी। वे भी भगवान का यह विकराल क्रुद्ध रूप देखकर डर गई। अंत में ब्रह्माजी ने प्रह्लाद को नरसिंह भगवान को शांत करने के लिए उनके पास भेजा। प्रह्लाद निर्भय भगवान के पास जाकर उनके चरणों पर गिर पड़े। भगवान ने स्नेह से उन्हें उठाकर अपनी गोद में बैठा लिया। वे बार-बार अपनी जीभ से प्रह्लाद को चाटते हुए कहने लगे- 'बेटा प्रह्लाद! मुझे आने में बहुत देर हो गई। तुझे बहुत कष्ट सहने पड़े। तू मुझे क्षमा कर दे।'

प्रह्लादजी का कंठ भर आया। आज त्रिभुवन के स्वामी उनके मस्तक पर अपना अभय कर रख कर उन्हें स्नेह से चाट रहे थे। प्रह्लाद धीरे से उठे। उन्होंने दोनों हाथ जोड़कर भगवान की स्तुति की। बड़े ही भक्ति भाव से उन्होंने भगवान का गुणगान किया। अंत में भगवान ने उनसे वरदान मांगने को कहा। प्रह्लाद जी ने कहा प्रभु आप वरदान देने की बात करके मेरी परीक्षा क्यों लेते हैं। जो सेवक स्वामी से अपनी सेवा का पुरस्कार चाहता है, वह तो सेवक नहीं, व्यापारी है। आप तो मेरे उदार स्वामी है। आपको सेवा की अपेक्षा नहीं है और मुझे भी सेवा का कोई पुरस्कार नहीं चाहिए। मेरे नाथ यदि आप मुझे शुद्ध वरदान ही देना चाहते हैं तो मैं आपसे यही मांगता हूं कि मेरे हृदय में कभी कोई कामना ही न उठे।'

फिर प्रह्लाद ने भगवान से प्रार्थना की मेरे पिता आपकी और आपके भक्त मेरी निंदा करते थे वह सब इस पाप से छूट जाएं।'

भगवान ने कहा प्रह्लाद! जिस कुल में मेरा भक्त होता है वह पूरा कुल पवित्र हो जाता है। तुम जिसके पुत्र हो वह तो परम पवित्र हो चुका। तुम्हारे पिता तो इक्कीस पीढ़ियों के साथ पवित्र हो चुके। मेरा भक्त जिस स्थान पर उत्पन्न होता है, वह स्थान धन्य है। वह पृथ्वी तीर्थ हो जाती है जहां मेरा भक्त अपने चरण रखता है।'

भगवान ने वचन दिया कि 'अब मैं प्रह्लाद की संतानों का वध नहीं करूंगा।' कल्पपर्यन्त के लिए अमर हुए। वे भक्तराज अपने महाभागवत पौत्र बलि के साथ अब भी सुतल में भगवान की आराधना में नित्य तन्मय रहते हैं।'

हे दीनबंधु हे दयानिधान,
शरण पड़े का रखना ध्यान।
मैं प्रह्लाद दैत्यन को जायो,
अपनों जान शरण में आयो।
जब जब नाम तुम्हारो लिन्हो,
मोहे बाप अति दु:ख दिन्हो।
तुने लाज मोरी रख लिन्ही,
देह धारण नरसिंह की किन्हीं।
जम्भदास तोहे किसकी आस,
किन बैठ भरोसे हरि बिसरायो।
ऐसे समर्थ दीनदयालु बिन।
तुने व्यर्थ ही जन्म गंवायो।

संदर्भ ग्रंथ-

1. श्रीमद्भागवत पुराण, 2. भागवत चरित, 3. सत्संग, 4. हिंदूस्तान अखबार, 5. अंतर्जाल, 6. मारवाड़ी भजन संग्रह।

- विनोद जम्भदास कड़वासरा
हिम्मतपुरा, तह.-अबोहर,
जिला-फाजिल्का (पंजाब)
E-mail: jambhdasvinod29@gmail.com

राजवर्ग और गुरु जाम्भोजी

अनादिकाल से ही राजा और प्रजा के बीच की कड़ी राजगुरु होते थे। जिस राजा के पास शिक्षक समर्थ गुरु नहीं होते थे, वह राजा अपने बल पर राज करता था। किन्तु बिना बुद्धि केवल बल एकाकी होता है, वह विनाश की ओर ले जाता है। राम के गुरु वशिष्ठ थे। कृष्ण के गुरु सन्दिपनी थे तथा अन्य अनेक उदाहरण मिलेंगे जहां गुरु ने ही राजाओं पर नियंत्रण किया है और सद्पथिक बनाया। आजकल धर्म निरपेक्ष की जो लोग बात करते हैं धर्महीन होकर क्या कोई न्याय एवं सुरक्षा कर सकने के समर्थ हो सकता है। 'धर्मेण हीना पशुभि: समाना।' राजा और प्रजा के बीच में शुद्ध सात्विक संबंध धर्म से ही संभव है। धर्म का अर्थ है कि अपने-अपने नियम मर्यादा पर चले। जहां भी नियम टूटा वहां पर अशान्ति होना निश्चित है।

विक्रमी संवत् 1508 में भगवान जम्भेश्वरजी का अवतरण गुरु रूप से पीपासर में हुआ। तब वहां के राजाओं की दिशा-दशा भी ठीक नहीं थी। आपसी लड़ाई-झगड़े तथा बाह्य डर भी सदा ही लगा रहता था। जब जाम्भोजी बाल्यावस्था में सम्भराथल पर गऊएं चराते थे, तभी से तत्कालीन राजाओं से सम्बन्ध बनता गया था। जोधपुर नरेश जोधा के बड़े पुत्र बीका ने बीकानेर बसाया था तथा मेड़ते का राव दूदा को राजा बनाया था। उसके बड़े भाई बरसिंग ने दूदा को देश निकाला दे दिया था। जाम्भोजी पीपासर कूवे पर गायों को जल पिला रहे थे और इसी समय दूदे की निराशा देखकर उनको शांत किया तथा उसे वापिस मेड़ते भेजा। एक केर की लकड़ी तथा अपना आशीर्वाद भी दिया तथा मेड़ते का राज वापिस दिलाकर दोनों भाइयों में संधि करवायी। जम्भसार में कहा है-

माघ मेल्हस चरन पकरेडू, दे मन्त्र शिष कीजिए।
कृपा रावरी पाऊ अटल पद, देख दरसन दीजिये।
देहूं भेख अलेख मो कहुं, जगत में जस लीजिये।
पर्शेतु जम्भ नरेश फिर करि, भेख मोरा राखीजिये।

हजूरी कवि उदोजी नैण ने प्रथम आरती में भी कहा है-

दूसरी आरती पीपासर आये, दूदे जी ने प्रभु परचो दिखाये।

यही चमत्कार दूदे जी को जाम्भोजी ने बताया था। अपनी अलौकिक शक्ति से अनहोनी भी होनी करके आपसी शांति करवायी थी।

राव जोधा ने जोधपुर बसाया था। राजा भयभीत रहता था। बाह्य तथा आन्तरिक दुख द्वन्द्वों से ग्रसित था। जाम्भोजी सम्भराथल वन में गायें चराते थे। उसी समय ही कुछ डाकू लोग गौ आदि पशुधन को चुराकर ले जा रहे थे। बालकों के कहने पर जाम्भोजी ने एक विधि नियम से उन पशुओं को छुड़ा दिया था। पीछे से राजकुमार वीदो, उदो आदि सेना सहित आ गये थे। पशुओं को चरते हुए देखकर सम्भराथल पर जाम्भोजी के पास आ गये। उस समय शब्द संख्या 2-6 तक सुनाया था और आपसी खून खराबे से बचाया था। उन राजकुमारों ने ही जाकर जोधा से कहा था कि इस प्रकार का आश्चर्य हमने देखा है। जोधा भी एक समय सम्भराथल पर जाम्भोजी से भेंट करने के लिए आया था और अपनी व्यथा कथा कही, तब जाम्भोजी ने जोधा को निर्भय करते हुए 'बैरीसाल नगाड़ा' दिया था और कहा था आज से तुम्हारे पर कोई अन्यायकारी राजा हमला करे तो यह नगाड़ा बजाकर चढ़ाई करना, शत्रु भयभीत होकर भाग जाएंगे। केवल मात्र नगाड़े की दिव्य ध्वनि श्रवण करने से ही शत्रु सेना, मित्र सेना के रूप में परिवर्तित हो जाती थी। कहा भी है-

भेर बाजा तो एक जोजनो, अथवा तो दोय जोजनो मेघ बजातो पंच जोजनो अथवा तो दस जोजनो। सोई उत्तर ले रे प्राणी। जुगां जुगांणी सतकर जाणी।(21)

इस प्रकार से राव जोधा एवं उनके पुत्र बीका के आपसी मनमुटाव को खत्म किया और बैरीसाल नगाड़ा प्रदान किया जो इस समय बीकानेर जूनागढ़ में विद्यमान है। बीकानेर का राजा बीका का पुत्र

लूणकरण और नागौर का सूबेदार महमद दोनों पड़ोसी राजा थे। कभी कभार आपसी वाद-विवाद राज्य की सीमा या धर्म-कर्म को लेकर हो जाया करता था। उनकी शंकाओं एवं वैर विरोध के भाव को जाम्भोजी सम्भराथल पर विराजमान होकर निपटाया करते थे। एक समय दोनों की आपसी भेंट हुई थी और लूणकरण कहने लगा जाम्भोजी तो हमारे हिन्दुओं के देव हैं तथा महमद कहता था कि हमारे मुसलमानों के पीर हैं। आपसी विवाद का निपटारा करने के लिए लूणकरण ने अपने पुरोहित को भेजा और महमद ने अपने काजी को भेजा। जाम्भोजी कौन थे? क्या थे? इस बात का निर्णय शब्द संख्या 7-12 तक सुनाया और कहा कि मैं किसी का नहीं हूं, या सभी का ही हूं। मेरे यहां किसी का भेदभाव नहीं है। 'साचा सूं सतभायो' जो सच्चे हैं उन्हीं का मैं हूं। आप दोनों राजा हो और प्रजा आपकी सभी तरह की है। आप किसी से जन्म के आधार पर भेदभाव न करें। **'उत्तम कुली का उत्तम न होयबा कारण किरिया सारूं'**।

प्रत्येक छठे महीने गंगानगर उत्तर प्रदेश से बिश्नोइयों की जमात आती थी। वे जमाती लोग अपनी पहचान स्नान, संध्या, ध्यान, हवन द्वारा दिया करते थे। एक समय यमुना के किनारे दिल्ली में ये जमाती लोग अपनी नित्य क्रिया कर रहे थे। वहीं पर हासम-कासम नाम के दो दर्जी भी उपस्थित थे। वे प्रह्लाद पंथी सुजीव थे। उन्होंने जाम्भोजी का परिचय पाया और नियमों का पालन करने लगे। उस समय दिल्ली में सिकन्दर लोदी बादशाह था। उसे पता चला तो उसने हासम-कासम को जेल में डाल दिया। गुरु जाम्भोजी स्वयं रणधीर जी को साथ में लेकर ऊंट रूपी विमान द्वारा दिल्ली पहुंचे और सिकन्दर को सचेत किया। कहा भी है-

जम्बु द्वीप ऐसा चर आयो, सिकन्दर चेतायो।
मान्यो शील हकीकत जायो, हक की रोजी धायो॥29॥

चित्तौड़ के सांगा राणा और उनकी राजमाता झाली राणी जो अपने को गुरुहीन मानकर अध्यात्म विद्या से वंचित थी। सदा सद्गुरु की प्रतीक्षा में थी। पूरब देश के बिश्नोइयों ने व्यापार करते हुए चित्तौड़ में प्रवेश किया था। झाली राणी और सांगा को सचेत किया था और जाम्भोजी से मिलन करवाने में कारण बने थे। झाली राणी को लक्ष्य करके एक सबद भी कहा था। सबद नं. 65-

आतर पातर राही रूखमण, मेल्हा मन्दिर भायो।

तथा जाम्भोलाव पर झाली राणी और जाम्भोजी की भेंट भी हुई थी। सांगा राणा को तथा झाली राणी को सोवन नगरी की अलौकिक वस्तुएं, झारी, माला और सुलझा वणी भी जाम्भोजी ने भेंट स्वरूप दी थी। रानी ने जाम्भोलाव तालाब खुदवायी हेतु धन भी दिया था। जाम्भोजी के सान्निध्य में आकर पूर्ण धार्मिक जीवन व्यतीत किया था। सांगा ने अपने राज्य में बिश्नोइयों को बसाया था। पुर, दरीबा, संभेलिया गांव अब भी बिश्नोइयों के हैं। संभेलिया में भव्य दिव्य ज्योति गुरु मंदिर का निर्माण साणिया ने करवाया था जो अब भी अपनी दिव्यता व अलौकिकता को प्रदर्शित कर रहा है। सबद सं. 111 भी सुनाया था।

जोधा जी का पुत्र वीदा राजकुमार जो द्रोणपुर का राजा था, विवादी व हठीला था। वह भी एक भक्त मोती मेघवाल की वजह से जाम्भोजी के संपर्क में आया था। मोती भक्त के आचरण व व्यवहार से वीदा खुश नहीं था। एक छोटी जाति का व्यक्ति उच्च कुल के जैसा व्यवहार वीदे के सामने कैसे कर सकता था। उसने मोती को जेल में डाल दिया था। उसे छुड़ाने के लिए जाम्भोजी स्वयं द्रोणपुर पहुंचे थे। वीदो को अपनी अलौकिक दिव्य शक्ति से प्रभावित करके अनुकूल किया था। तीन परचे वीदो को दिखाये थे- आकों के आम, नीबों के नारियल और जल का दूध। इतने पर भी वीदे ने मोती को छोड़ना स्वीकार नहीं किया था। भगवान कृष्ण ने अर्जुन को जो विराट रूप दिखाया था, वही विराट रूप देखने की वीदा जिद करने लगा। जाम्भोजी ने अपना विराट रूप अनेक रूपों में अनेक जगहों पर हवन करते हुए दिखाया था और उस समय सबद नं. 67 शुक्ल हंस भी कहा था-

श्री गढ़ आल मोतपुर भूंय नागौरी, म्हे ऊंडे नीरे

अवतार लीयो ॥

जिस स्थान पर गांव से बाहर धोरे पर जाम्भोजी विराजमान थे, वहीं पर वीदा क्रोध से भरकर आया था। पीछे से जाकर पीठ पर लात मारने का विचार लेकर चला था, किन्तु पास में आते-आते क्रोध शांत हो गया था। क्योंकि पतंजलि ने कहा है-

'अहिंसा प्रतिष्ठायां तत् सन्नि धौ वैर त्यागः ॥

जाम्भोजी पूर्णतः अहिंसा में प्रतिष्ठित थे तभी वीदा नजदीक आते-आते वैर भाव भूल गया था। यही महापुरुषों की पहचान है।

राजा लोग एक दूसरे राज्यों पर चढ़ाई करके भूमि छीन लेते थे, उसके लिए बहुत बड़ा खून-खराबा होता था। नवयुवकों को विकास कार्य में लगाना चाहिए। राजा लोग उन्हें युद्ध में झोंक देते थे। यह भूमि तो किसी की नहीं है, किन्तु अहंकारवश लड़ते-झगड़ते ही दिव्य जीवन लीला को समाप्त कर देना अपनी वीरता समझते थे। बीकानेर राजा लूणकरण नारनौल हस्तगत करने के लिए सेना लेकर तैयार हुआ। अनेक ज्योतिषियों से मुहूर्त निकलवाया। सभी ने युद्ध में जाने की सम्मति प्रदान कर दी। आखिर में लूणकरण ने जांभोजी के पास अपना एक सेवक भेजा और कहा जांभोजी से पूछकर आओ। गुरुदेव वहीं जहां लूणकरण था, वहीं पहुंचे और संदेश भिजवाया कि लूणकरण से कहे अभी युद्ध में न जाए, वापिस नहीं आओगे। लूणकरण ने जाम्भोजी की बात नहीं मानी और युद्ध के लिए चल पड़ा। लूणकरण का एक बेटा प्रतापसी तो साथ में था, दूसरा बेटा जेतसी अपने पिता से नाराज होकर जाम्भोजी के पास सम्भराथल आया और दुखी मन से कहने लगा- मेरे पूज्य पिताजी ने मेरे साथ न्याय नहीं किया। मैंने एक घोड़ा मांगा था, वही नहीं दिया।

जाम्भोजी ने कहा मैं तुझे 'भाटियो' देता हूं अर्थात् बीकानेर का किला वह एक पत्थर ही तो है। लूणकरण तुम्हारे पिता वापिस लौटकर नहीं आएंगे। जाओ नीति से राज करो। जैसा जाम्भोजी ने कहा वैसा ही हुआ था। इस अवसर पर सबद 87, 65 कहे थे।

जोधपुर नरेश राठौड़ का भानजा जेतसी टोडे का राजा था। वहां का एक चारण कवि अजमेर बादशाह मल्लूखान के राज दरबार में पहुंचा और अपने राजा नेतसी की महिमा के गीत गाये। कवि को क्या पता था कि इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा। वही तो होना ही था, कहीं का गीत कहीं गाओगे तो निश्चित ही फंस जाओगे। मल्लूखान से सहन नहीं हुआ और टोडे पर चढ़ाई करके नेतसी को बंदी बनाकर अजमेर की जेल में डाल दिया और उस कवि से कहा- अब उल्टे गीत गाओ।

जोधपुर में सांतल राजा थे और भी उनके अधीन आठ राजाओं को एकत्रित करके अजमेर पर चढ़ाई कर दी। अजमेर जोधपुर की सीमा पर थावले गांव में डेरा डाला फिर विचार किया कि किस प्रकार नेतसी छूट सकता है। युद्ध करोगे तो असंभव है छूटना। दोनों तरफ भारी खून-खराबा होगा। समझौता करने का समय नहीं है। यहां तक सेना लेकर आ गये हैं। अब तो कोई ईश्वरीय चमत्कार हो तभी असंभव को संभव बना दे।

उनके साथ मेड़ते का राव दूदा भी था जो जाम्भोजी का परम भक्त था। उन्होंने सलाह देते हुए कहा कि इस विषम परिस्थिति में सम्भराथल पर विराजमान जाम्भोजी ही निर्णय करके सहयोगी हो सकते हैं। दूदे ने कहा कि यहीं रूको। जाम्भोजी अंतर्यामी हैं, वे अपने दिल की पुकार सुनकर अवश्य ही हमारा सहयोग करेंगे। हमें महान विपत्ति से बचाएंगे। उन राजाओं की पुकार सुनकर जांभोजी थांवले पहुंचे और मल्लूखान से समझौता करवाया। आपसी होने वाले वैरभाव खून-खराबा, जीव हत्या से बचाया।

राव सांतल एवं मल्लूखान को सबद सुनाए तथा उनके हृदय में जल रही अग्नि को शीतल जल का छींटा देकर निवृत किया और नेतसी को आदर सहित वहां पर बुलाकर सांतल राजा को सौंप दिया। दोनों राज्यों के आपसी होने वाले वैरभाव को शांत किया।

जैसलमेर के राजा जेतसी के बल पर गुरुदेव जी पधारे थे और उन्हें जीवों की रक्षा करने का सदुपदेश दिया था। जांभोजी की प्रेरणा से ही जेतसी ने जैत संमद

बांध बनाया था जिससे सभी जीव जन्तुओं को जल की उपलब्धि हो सके तथा जाम्भोलाव तालाब खुदवाने में भी जेतसी ने सहयोग प्रदान किया था।

मूलाराम पुरोहित राव गागा के दरबार में जोधपुर पहुंचा और जांभोजी की महिमा का वर्णन किया और कहा इस समय हमारे देश में प्रत्यक्ष देवता जाम्भोजी विराजमान हैं। उनकी वार्ता सुनकर राजकुमार मालदेव ने कहा कि मैं स्वयं मिलूंगा वार्तालाप होगी तभी बात स्वीकार होगी। मूले को साथ में लेकर मालदेव लोहावट की साथरी पर जाम्भोजी से भेंट की। मूले ने आदि उत्पत्ति के बारे में पूछा था जाम्भोजी ने सबद नं. 93 कहा–

आद सबद अनाहद वाणी, चवदै भवण रह्या छल पांणी।
जिहि पाणी से इंड उपना, उपना ब्रह्मा इन्द्र मुरारी।

मालदेव ने पूछा कि प्रथम उत्पत्ति में कौन–कौन हुए, जाम्भोजी ने सबद नं. 94 सुनाया– **'सहस्र नांव सांई भल शिंभु, म्हे उपन्ना आदि मुरारी।'**

मालदेव ने पूछा– अलख शिंभु ने तो सृष्टि रचाई किन्तु अलख शिंभु को बनाने वाला कौन है। सबद नं. 105 सुनाया। मूला विवाद करने लगा। जाम्भोजी ने सबद 95 सुनाया था तथा अन्य भी अनेक दिव्य भगवत लीला से होने वाले अलौकिक परचे प्राप्त किये थे।

यहां तक प्राय: सभी राजाओं से जाम्भोजी की भेंट के बारे में सामान्य परिचय दिया गया है। विस्तार से पोथो ग्रन्थ ज्ञान, जम्भसार, जम्भसागर तथा जांभा पुराण में पढ़ें।

–आचार्य कृष्णानन्द
अध्यक्ष, जाम्भाणी साहित्य अकादमी
बीकानेर,
मो.: 9897390866

लेखकों से अनुरोध है कि.....

- जांभाणी सिद्धान्तों व विचारधारा का प्रसार–प्रचार ही इस पत्रिका का मूल उद्देश्य हैं। लेखक अधिकाधिक इसी उद्देश्य के आलोक में लिखकर भेजें।
- अपने लेखों में जंभवाणी के उद्धरण देते समय उसका मूल से मिलान अवश्य करें व कोष्ठक ( ) में सबद क्रम संख्या भी लिखें।
- विभिन्न संदर्भ ग्रंथों के उद्धरण देते समय भी कोष्ठक ( ) में उनका संदर्भ लिखें।
- विशेषांक हेतु भेजे जाने वाला लेख 1500 शब्दों (अमर ज्योति के तीन पृष्ठों) से अधिक न हो, इससे अधिक होने पर लेख को क्रमश: छापा जाएगा।
- विभिन्न जांभाणी मेलों, उत्सवों व सामाजिक गतिविधियों का विवरण भेजते समय ध्यान रखें कि आपकी सामग्री 10 तारीख तक पत्रिका कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए, क्योंकि पत्रिका 15 तारीख तक मुद्रण हेतु भेज दी जाती है।
- लेख टाइप करके भेजें तो अधिक अच्छा होगा, अन्यथा बांई ओर दो इंच का हाशिया छोड़कर साफ सुथरा लिखकर भेजें।
- लेख के साथ मौलिकता का प्रमाण–पत्र भेजना अनिवार्य है।
- लेख फोंट AAText, Karuti Dev, Devnagri में टाइप करके ई–मेल पर भी भेज सकते हैं। पत्रिका का ई–मेल पता है– editor@amarjyotipatrika.com,
- लेखक लेख के साथ अपना पूरा पता, दूरभाष नं., यदि हो तो ई–मेल पता भी आवश्यक रूप से लिखें।

–सम्पादक

जाम्भाणी संत साहित्य और सार्वभौमिक मानव मूल्य

मध्ययुगीन संतकाव्य युगीन सामन्तवादी और रूढ़िवादी परिवेश में मानवतावादी चेतना की एक प्रखर अभिव्यक्ति है। ये साहित्य सृजन मध्ययुगीन सांस्कृतिक जागरण की सशक्त अभिव्यक्ति है, जो ठेठ गहरे मानवीय सरोकारों से उपजी हुई सार्वभौमिक मानव मूल्यों को प्रतिष्ठापित करता है।

जाम्भाणी संत साहित्य से हमारा तात्पर्य बिश्नोई पंथ प्रवर्तक गुरु जाम्भोजी की विचाराधारा को क्रियान्वित करते हुए, उसका अनुसरण करते हुए, जो साहित्य सृजित किया गया उससे है। यह साहित्य न केवल उनके द्वारा प्रवर्तित पंथ के लोगों द्वारा ही सृजित एवं संरक्षित किया गया है, अपितु अन्य पंथ, जाति, धर्म-सम्प्रदाय आदि के भी सुधी-बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा भी लिखा-पढ़ा गया है।

सार्वभौमिक मूल्यों से तात्पर्य उन मूल्यों से है जिनकी प्रासंगिकता प्रत्येक भौगोलिक परिवेश और अतीत, वर्तमान एवं भविष्य के कालखण्ड में हो। इस साहित्य की प्रासंगिकता तब होती है जब वह मानव मूल्यों या किसी परिवेश विशेष को नवीन सन्दर्भों से परिष्कृत करते हुए चुनौती देता है। जो लोक कल्याण, मानवता, लोकधर्म, सामाजिक विषमता, धार्मिक आडम्बरों का खण्डन और अखण्ड प्राकृतिक सत्ता के प्रति गहरे लगाव के रूप में अभिव्यक्त करता है।

जाम्भाणी साहित्य के आदि महापुरुष एवं बिश्नोई पंथ प्रवर्तक गुरु जाम्भोजी की वाणी महान एवं कालजयी है, जो मनुष्य के अस्तित्व एवं अस्मिता के समक्ष संकट और मानवता को अपमानित करने वाले तत्वों के समक्ष प्रश्न चिह्न खड़ा करती है। साथ ही मानवीय एकता, सामाजिक समरसता और समन्वयता की भावना को विस्तार प्रदान करती है। लोक जागरण की पक्षधरता को मुखरित करने वाली यह वाणी समस्त मानवता के इस दायित्व का बखूबी से निर्वहन करती है। जाम्भाणी संत कवि चाहे वे तेजोजी चारण हो या ऊदोजी नैण, मेहोजी गोदारा हो या परम भगत, वील्होजी हो या सुरजनदासजी पूनिया, केसौजी गोदारा हो या परमानन्दजी बणियाल या कील्हजी चारण, गोकल जी, आलमजी, रैदास धतरवाल, मयाराम, ऊदोजी अड़ींग, रामलला और साहबराम राहड़ हो, सभी का साहित्य मध्यकालीन संत साहित्य के क्षेत्र में विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। जिनमें सभी संत-कवियों के अपने-अपने निजी विश्वास, बिश्नोई पंथ की अवधारणा एवं मानव मूल्य है। जिनका आधार भले ही जम्भवाणी हो, परन्तु इन संत कवियों के साहित्य में ऐसे मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठापित किया गया है जो सार्वदेशिक एवं सार्वकालिक है। जाम्भाणी संत कवि एक ऐसे मानव धर्म की नयी व्याख्या करते हैं, एक ऐसे मानव मूल्य की प्रस्तावना लिखते हैं, जिसका आधार यह परम विश्वास है कि प्रकृति के प्रत्येक कण-कण में परमात्मा बसते हैं, चाहे वे सजीव हो या निर्जीव (विष्णु की सर्वत्र व्यापकता, सामाजिक संगठन, आदर्शवादिता, नैतिकता, लोकजागरण, पुनर्जन्म एवं कर्म सिद्धान्त को मान्यता प्रदान करते हुए शास्त्र-वेद आदि को भी महत्त्व प्रदान करते हैं। इसी आधार पर ये संत कवि मानवता की पीड़ा एवं व्यथा को समझकर, उसे पहचानने और मानव धर्म को जोड़ने वाले एकता का सूत्र स्थापित कर रहे हैं। यह मानव धर्म किसी विशेष जाति, धर्म, सम्प्रदाय, पंथ आदि से परे है।

दुनिया के अधिकांश देशों में जब धर्म का प्रभाव बढ़ने लगता है तो पूरे माहौल में एक ही धर्म रहता है। कोई अन्य धर्म नहीं होता और जब धर्म का बंधन टूटता है तो उसको तोड़ने वाले उसी धर्म से उपजते हैं, विधर्मी नहीं होते। मध्ययुगीन भक्ति साहित्य में प्रवर्तित बिश्नोई पंथ का साहित्य मानवधर्मी है। वर्तमान के धर्मनिरपेक्षता के लिए तेजोजी चारण, आलमजी, समसदीन, मेहोजी, परमभगत एवं डेल्हजी और उनका मानव धर्म एक चुनौती की तरह है। इन संत कवियों द्वारा सृजित साहित्य साधना जीवन के प्रति आस्था से निकली हुई मानवीय सरोकारों से परिपूर्ण तथा हृदय

की अतल गहराइयों से निसृत है। जाम्भाणी साहित्य मानवीय संवेदना को मानवीयता से जोड़ता है, मानवता की नयी परिभाषा करता है तथा नव मानव धर्म रचता है। यह नव धर्म ही लोकधर्म है और इसी लोकधर्म के प्रति समूचा संत साहित्य समर्पित है। जाम्भाणी संत कवियों ने युगीन जनजीवन का सीधा साक्षात्कार करके उनके जीवन के उद्‌गारों को अपने हृदय में प्रकट भावों के माध्यम से व्यक्त किया है। ये संत कवि अपनी सरलता, सादगी और लोक के प्रति प्रेमासक्ति के कारण ही संत है। डॉ. रामविलास शर्मा लिखते हैं कि 'संत साहित्य भारतीय जनता के प्रेम, घृणा, आशाओं और वेदना का दर्पण है। वह उसके हृदय की सबसे कोमल, सबसे सबल भावनाओं का प्रतिबिम्ब है। उसी मानवीय सहजता, लौकिक जीवन में आस्था और उज्ज्वल भविष्य की कामना का प्रतीक है।' संत कवियों के साहित्य में मानवीय मूल्यों का बोध सामाजिक यर्थात से युक्त है। बिश्नोई पंथ के तत्कालीन सामान्य लोक जन जीवन का यर्थात चित्रण संत कवियों की पियूषवर्षिणी वाणी में निहित है। मानवीय सद्‌वृत्तियां, प्रेम, क्षमा, करुणा, शील, सेवा, त्याग, अहिंसा जैसे चिरंतन मानवीय मूल्य इस पंथ के संत साहित्य में भावनात्मक रूप से निरूपित हुए हैं।

धर्म को उत्तुंग शिखर से उतारकर ठोस (देहाती) जमीन पर लोक-जीवन से जोड़कर धरातल पर प्रतिष्ठापित करना, इन संतों का सबसे महान एवं अनुकरणीय कार्य है। बिश्नोई पंथ का मध्यकालीन संत साहित्य भक्ति एवं धर्म का प्रधान स्वर होने के साथ ही लोक जीवन का प्रमुख कार्य हो गया है। जो लोक में विभिन्न शैलियों एवं भिन्न-भिन्न लोक प्रचलित देशी राग-रागिनियों में गेय है। इस पंथ के संत साहित्य की बुनियाद लोक जीवन है। यह मनुष्य की सहजता तथा जन सामान्य की आशा-आकांक्षा एवं उनकी स्वाभाविक भावनाओं का काव्य है, जिसमें तत्कालीन लोक संस्कृति का सौन्दर्य छुपा हुआ है। इन संत कवियों ने अपने साहित्य में आत्म-सम्मान एवं आत्म-विश्वास की भावना को जाग्रत किया है तथा मानवता की प्रतिष्ठा हेतु भेद-बुद्धि के निराकरण को प्राथमिकता दी है। संत कवि आरम्भ से ही समाज में व्याप्त बाह्य आडम्बर, पाखण्ड, कर्मकाण्ड, चारित्रिक पतन आदि कुप्रथाओं को पूर्णत: नकारते रहे हैं। साथ ही किसी भी अन्य पंथ-सम्प्रदाय या धर्म विशेष की निन्दा एवं नकारते नहीं है।

लोकहितवादी विचारधारा को लेकर चलने वाला काव्य है। अधर्म जन्य विशृंखल समाज को सावचेत करते हुए उनके स्थान परजन सामान्य के चरित्र निर्माण, संयम, हृदय तथा मन की पवित्रता, एवं सत्य (मानवतावादी) धर्म के स्वरूप को निर्देशित करते हैं। उनके प्रगतिशील जीवन की ओर संकेत करते हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों का त्याग एवं उनके स्थान पर सत्य, अहिंसा, दया, प्रेम, भाईचारा, परोपकार आदि मानवीय मूल्यों का महत्त्व प्रतिपादित करते हैं, क्योंकि ये सभी उत्तम मानवता के लक्षण है।

ब्रह्माण्ड में मानव जगत के अतिरिक्त जीव जन्तु, वनस्पति एवं भौतिक पदार्थों आदि का भी विशाल संसार है। जिनके साथ मानव का घनिष्ठ सम्बन्ध है। इन सभी के प्रति लगाव एवं इसे बनाये रखना आवश्यक है। इन संतों का प्रकृति के प्रति अगाध प्रेम वास्तव में विश्व मानवता के प्रति प्रेम को प्रतिष्ठापित करता है।

संत कवियों की सार्वभौमिकता का एक विशिष्ट गुण उनकी विवेकपरक दृष्टि है जो मानव की अंतरात्मा के सहायक तत्वों में सबसे प्रमुख एवं विश्वसनीय है। विवेक परक दृष्टि से वे मानव की महत्ता को पहचानकर उनके गरिमामय जीवन का मार्ग प्रशस्त करते हैं। लोकभाषा में साहित्य सृजित करके जनसामान्य तक निर्माण करना ही सच्चे अर्थों में सार्वभौमिक मानव मूल्य है जो लोक एवं समाज में विरासत के रूप में अक्षुण्य है।

-रामस्वरूप
जैसलां, तह.-बाप,
जिला-जोधपुर (राज.)

प्रभु की प्राप्ति किसे होती है?

एक राजा था। वह बहुत न्याय प्रिय तथा प्रजा वत्सल एवं धार्मिक स्वभाव का था। वह नित्य अपने इष्ट देव की बड़ी श्रद्धा से पूजा-पाठ और याद करता था। एक दिन इष्ट देव ने प्रसन्न होकर उसे दर्शन दिये तथा कहा 'राजन् मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ। बोलो तुम्हारी कोई इच्छा है?'

प्रजा को चाहने वाला राजा बोला- 'भगवन्! मेरे पास आपका दिया हुआ सब कुछ है। आपकी कृपा से राज्य में सब प्रकार सुख-शान्ति है। फिर भी मेरी एक इच्छा है कि जैसे आपने मुझे दर्शन देकर धन्य किया, वैसे ही मेरी सारी प्रजा को भी दर्शन दीजिये।'

'यह तो सम्भव नहीं है', भगवान ने राजा को समझाया। परन्तु प्रजा को चाहने वाला राजा भगवान् से जिद्द करने लगा। आखिर भगवान को अपने साधक के सामने झुकना पड़ा और वे बोले- 'ठीक है, कल अपनी सारी प्रजा को उस पहाड़ी के पास लाना। मैं पहाड़ी के ऊपर से दर्शन दूँगा।'

राजा अत्यन्त प्रसन्न हुआ और भगवान को धन्यवाद दिया। अगले दिन सारे नगर मे ढिंढोरा पिटवा दिया कि कल सभी पहाड़ के नीचे मेरे साथ पहुँचे, वहाँ भगवान् आप सबको दर्शन देंगे।

दूसरे दिन राजा अपने समस्त प्रजा और स्वजनों को साथ लेकर पहाड़ी की ओर चलने लगा। चलते- चलते रास्ते मे एक स्थान पर तांबे के सिक्कों का पहाड़ देखा। प्रजा में से कुछ एक उस ओर भागने लगे। तभी ज्ञानी राजा ने सबको सतर्क किया कि कोई उस ओर ध्यान न दे, क्योंकि तुम सब भगवान से मिलने जा रहे हो, इन तांबे के सिक्कों के पीछे अपने भाग्य को लात मत मारो। परन्तु लोभ-लालच मे वशीभूत कुछ एक प्रजा तांबे कि सिक्कों वाली पहाड़ी की ओर भाग गयी और सिक्कों की गठरी बनाकर अपने घर की ओर चलने लगे। वे मन ही मन सोच रहे थे, पहले ये सिक्कों को समेट ले, भगवान से तो फिर कभी मिल लेंगे।

राजा खिन्न मन से आगे बढ़े। कुछ दूर चलने पर चांदी के सिक्कों का चमचमाता पहाड़ दिखाई दिया। इस बार भी बचे हुये प्रजा में से कुछ लोग, उस ओर भागने लगे ओर चांदी के सिक्कों को गठरी बनाकर अपने घर की ओर चलने लगे। उनके मन में विचार चल रहा था कि ऐसा मौका बार-बार नहीं मिलता है। चांदी के इतने सारे सिक्के फिर मिले न मिले, भगवान तो फिर कभी मिल जायेंगे। इसी प्रकार कुछ दूर और चलने पर सोने के सिक्कों का पहाड़ नजर आया। अब तो प्रजाजनों में बचे हुये सारे लोग तथा राजा के स्वजन भी उस ओर भागने लगे। वे भी दूसरों की तरह सिक्कों की गठरी लाद कर अपने-अपने घरों की ओर चल दिये। अब केवल राजा ओर रानी ही शेष रह गये थे। राजा रानी से कहने लगे- 'देखो कितने लोभी ये लोग। भगवान से मिलने का महत्व ही नहीं जानते हैं। भगवान के सामने सारी दुनिया कि दौलत क्या चीज है?' सही बात है- रानी ने राजा कि बात का समर्थन किया और वह आगे बढ़ने लगे।

कुछ दूर चलने पर राजा ओर रानी ने देखा कि सप्तरंगी आभा बिखरता हीरों का पहाड़ है। अब तो रानी से रहा नहीं गया, हीरों के आर्कषण से वह भी दौड़ पड़ी और हीरों की गठरी बनाने लगी। फिर भी उसका मन नहीं भरा तो साड़ी के पल्लू में भी बांधने लगी। वजन के कारण रानी के वस्त्र देह से अलग हो गये, परंतु हीरों का तृष्णा अभी भी नहीं मिटी। यह देख राजा को अत्यन्त ग्लानि और विरक्ति हुई। बड़े दु:खद मन से राजा अकेले ही आगे बढते गये।

वहां सचमुच भगवान खड़े उसका इन्तजार कर रहे थे। राजा को देखते ही भगवान मुस्कुराये और पूछा- 'कहाँ है तुम्हारी प्रजा और तुम्हारे प्रियजन। मैं तो कब से उनसे मिलने के लिये बेकरारी से उनका इन्तजार कर रहा हूं।'

राजा ने शर्म और आत्म-ग्लानि से अपना सर झुका दिया। तब भगवान ने राजा को समझाया- 'राजन जो लोग भौतिक सांसारिक प्राप्ति को मुझसे अधिक मानते है, उन्हें कदाचित मेरी प्राप्ति नहीं होती और वह मेरे स्नेह तथा आशीर्वाद से भी वंचित रह जाते हैं।'

भावार्थ यह है कि जो आत्माएं अपनी मन और बुद्धि से भगवान पर कुर्बान जाते हैं और सर्व सम्बधों से प्यार करते हैं, वह भगवान के प्रिय बनते हैं।

-शैलजा बेदी
कमला नगर, हिसार

होली आई है...

आया है फाग, लाया है राग
धुले सब दाग, खुले हैं भाग
मिले अनुराग, खिले हैं बाग
लगी जो लाग, बंधी है पाग
प्रेमभाव के बंधन की यह मोली लाई है।
राग-रंग और हँसी-खुशी ले होली आई है॥

हो मस्त मलंग, ले प्रीत पतंग
खिले अंग-अंग, ज्यूं लहर तरंग
बजे जो चंग, करे हैं दंग
सुनहरे रंग, लेकर के संग
यूँ रंग-रंगीले रंगों की रंगोली छाई है।
राग-रंग और हँसी-खुशी ले होली आई है॥

इक नार कमाल, वो मस्त मलाल
मटकती चाल, वो हुस्न रसाल
घटा सम बाल, मोह का जाल
दे चंग पे ताल, करे वो धमाल
ले रंग गुलाल, रंगे मेरे गाल
कर दिया मलंग मुझे, ज्यूं भांग की गोली खाई है।
राग-रंग और हँसी-खुशी ले होली आई है॥
नटखट नटराज, बने रंगसाज
प्रीत का ताज, पहन कर आज
भुलाकर लाज, काम और काज
सजाकर साज, गाज और बाज
खुशियों से भरपूर 'अशोका' झोली पाई है।
राग-रंग और हँसी-खुशी ले होली आई है॥

-अशोक बिश्नोई (भंवाल)
मानेवड़ा, जोधपुर (राज.)

देखे-देखो होली आई

देखो-देखो होली है आई,
चुन्नू-मुन्नू के चेहरे पर खुशियां हैं आई।
मौसम ने ली है अंगड़ाई।

शीत ऋतु की हो रही है बिदाई,
ग्रीष्म ऋतु की आहट है आई।
सूरज की किरणों ने उष्णता है दिखलाई,
देखो-देखो होली है आई।

बच्चों ने होली की योजना खूब है बनाई,
रंगबिरंगी पिचकारियां बाबा से है मंगवाई।
रंगों और गुलाल की सूची है रखवाई,
जिसकी काका ने अनुमति है नहीं दिलवाई।

दादाजी ने प्राकृतिक रंगों की बात है समझाई,
जिस पर सभी बच्चों ने सहमति है जतलाई।
बच्चों ने खूब मिठाइयां खाकर शहर में खूब धूम है मचाई,
देखो-देखो होली है आई।

होली ने भक्त प्रह्लाद की स्मृति है करवाई,
बच्चों और बड़ों ने कचरे और अवगुणों की होली है जलाई।
होली ने कर दी है अनबन की सफाई,
जिसने दी है प्रेम की जड़ों को गहराई।

बच्चों! अब है परीक्षा की घड़ी आई,
तल्लीनता से करो पढ़ाई वरना सहनी पड़ेगी पिटाई।
अथक परिश्रम, पुनरावृत्ति देगी सफलता,
अपार जन-जन की मिलेगी बधाई।
होगा प्रतीत ऐसा होली-सी खुशियां हैं फिर लौट आई,
देखो-देखो होली है आई।

-मृगेन्द्र वशिष्ठ
बढ़वाली ढाणी, हिसार

सुरजनजी कृत हरजस

(राग विळावळ)

अपणां सांई आपमां, कस्य देखौ काया।
तीरथ वरत अचार है, सतगुरु की माया॥1॥टेक
सकळ वियापी एक है, करि लीजो दाया।
दरपण मां मुष देखि ले, गुर ग्यान बताया॥2॥
तिल मां तेल पोहप मां, रस बास समाया।
प्रेम जतन ता ऊपजै, उपदेस लखाया॥3॥
दीन गरीबी बंदगी, भजीयै एक धारा।
पर उपगार विचारीयै, करिये प्रेम पियारा॥4॥
एक रीझावै राग तै, एक रूप रीझाया।
सभ का सांई साच मां, गुर ग्यांन बताया॥5॥
भ्रम चक्र तै ऊपजै, संभल्य गुर भाई।
मोह चक्र की गांठि मां, जुग वंध्यौ जाई॥6॥
मन्यसा वाचा क्रमनां, रहणी एक धारा।
जन सुरजन की वीनती, भज्य उतरौ पारा॥7॥

हे प्राणी, तुम्हारा परमात्मा तुम्हारे में ही है, इस शरीर की कसोटी पर कसकर देखो। तीर्थ, व्रत, आचार ये सब माया है, इनसे सतगुरु नहीं मिलता है। ईश्वर सर्वव्यापक और एक है, उसे पहचानो। जैसे दर्पण में स्वयं का मुख ही दीखता है, उसी प्रकार गुरु के ज्ञान से शरीर में परमात्मा के दर्शन होते हैं। जिस प्रकार तिल में तेल, पुष्प में सुगन्ध और रस विद्यमान है, इस प्रकार परमात्मा को प्रेम के यत्न से पाया जा सकता है, यही गुरु का उपदेश है। गरीबों की सेवा, विष्णु का स्मरण, दूसरों की भलाई और प्रेम करें, यही सच्चा उपदेश है। कोई ईश्वर को राग से, कोई उसे रूप से प्रसन्न करता है, परन्तु सबका परमात्मा तो सत्य में है, ऐसा गुरु ने ज्ञान दिया है। हे गुरु भाई सुनो, भ्रम चक्र से सब विकार उत्पन्न होते हैं और मोह माया के चक्र में सब संसार बचा हुआ है। कवि सुरजन जी कहते हैं कि मन, वचन, कर्म से शुद्ध रहो और विष्णु भगवान का भजन करके, इस भवसागर से पार उतरो।

(राग भैरूं)

अब जो चंद मुराळ्य चात्रग, कोकिल कीर कुरंग लिपटाए।
कंचन ताळ बाळ फुनंग फुन पांवन, कसै कवळ वंदन विगसाय॥1॥टेक
आकै मुकट कोटि तिज सोभा, सो मोहि आज करत दिल दूजी।
जळरी परी पकौ तारेप, तस असवार मात गति पूजी॥2॥
एक राह इकवीस डगर संग्य, रीण नेत मां जात।
अरज राधा अब नंदन, कहो हरि सूं बात॥3॥
त्रकुटी आग त बंध प्रीतम, तस होत वर कुलीन।
षट दुंण सारंग वेनां सारंग, सभ होत आज मलीन॥4॥
मैन सुता पति वाहन के वाहन, ता वाहन अरज सुनाऊं।
कुंकुमम को पालन परसुं, मम नैन को अक वहाऊं॥5॥
धुत सुता नांव के नंदन, ताकी पाती सबद सुनाऊं।
अबज मील नंदन को नंदन, ताको प्रीतम मारय वहांऊं॥6॥
लोयण चंद चिकौर मीन जळ, जळहरे खंडत रसनां गायौ।
सुरजनदास आस हरि पूरवै, रहीये चरण कंवळ लिपटायो॥7॥

चंद, हंस, पपीहा, कोयल, तोता, मृग ये सब एक स्थान में हैं। सोना, सर्प, कमल ये सब स्त्री के शरीर में शोभायमान हैं, इन्हीं को श्रृंगार कहते हैं। (राधा का वर्णन है) जिनके करोड़ों मुकुट शोभायमान हैं, वह कृष्ण भगवान मेरे से दिल चुराते हैं। जैसे बादलों का प्रेमी मोर और मोर का सवार श्याम कार्तिक (शंकर का पुत्र) है, जिनकी माता पार्वती है। पार्वती ने सीता का स्वरूप धारण किया था। इस कारण शंकर भगवान ने उनका त्याग कर दिया था, उस समय जो गति पार्वती की हुई थी, राधा कहती है- अब मेरी वही गति है। मुख्य रास्ता एक है लेकिन छोटे-छोटे अनेक रास्ते हैं, यह रात्रि मुझे एक युग के समान लगती है। अब राधा विनय करती है- हे कृष्ण, अब आप विमुख मत रहो। हे प्रीतम, जो स्त्री को जीवन भर निभाता है, वही वर श्रेष्ठ कुल का होता है, मेरा चीर और काजल आपके न आने से मलीन हो गये हैं। राधा कहती है कि मेरा सोना नहीं होता, मैं कुंकुम का स्पर्श नहीं करूंगी, आंसुओं के जल से मैं मेरे नैनों का काजल बहाऊंगी। राधा अपने मन में ऐसा सोचती है, कागज में उन्हें स्नेह के सबद लिखूं और कपट को दूर हटाऊं, हे नन्द के पुत्र, कृष्ण, अब मुझे मिलो, मेरी सौत कोई हो तो उसे दूर करो। जैसे चकोर चन्द्रमा को और मछली जल को चाहती है, ऐसे मेरी आंखों में आपके लिए प्रेम है, मेरी जिह्वा भगवान के नाम का उच्चारण करती है, सुरजनदासजी कहते हैं कि हे भगवान, मेरी आशा की पूर्ति करो और मुझे अपने चरणों में शरण दो।

साभार- बिश्नोई संतों के हरजस

बिश्नोई लोकगीत

हथलेवो

इण हथलेवै दादा–दादी परणया।
इण हथलेवै मामो–मामी परणया।
हण हथलेवै काकी–काको परणया।
हण हथलेवै भरजाई–भाई परणया।
पहले तो फेरै लाडली काकै री भतीजी।
दूजै तो फेरै लाडली मामा री भाणेजी।
तीजै तो फेरै लाडली बाबाजी री बेटी।
चौथे तो फेरै लाडली होई रे पराई।

––00––

इक्कीसी

घालो ए रामू जी रा राजू, घालो इक्कीसी।
थारी इक्कीसी सूं म्हारो थाळ भरीजै॥
घालो ए रामकरण जी रा हनुमान, घालो इक्कीसी।
थारी इक्कीसी सूं म्हारो थाळ भरीजै॥
घालो ए लादू जी रा कालू, घालो इक्कीसी।
थारी इक्कीसी सूं म्हारो थाळ भरीजै॥
घालो काळू जी रा मालू, घालो इक्कीसी।
थारी इक्कीसी सूं म्हारो थाळ भरीजै।

––00––

साभार- बिश्नोई लोकगीत

विदाई के गीत

मोरियो ए मां, मोरियो ए मां।
सरवरिय री ऊंची–नीची पाळ मोरला, मोरियो ए मां॥
धोबीड़ो तो धोवै धोळा धोतिया ए मां मोरला। मोरियो ए मां॥
धोय धाय कियो रे बणाव मोरला। मोरियो ए मां॥
आयड़ा कुणा जी रा सिव, राजीड़ा कुणाजी रा पावण मोरला ?
मोरियो ए मां॥
आयड़ा रामू जी रा सिव मोरला। मोरियो ए मां॥
आयड़ा राजू जी रा पावणा मोरला। मोरियो ए मां॥
बाबै गो बाई रो डोयड्या तांई गो साथ मोरला। मोरियो ए मां॥
माता बाई री आंगणो बुळाय मोरला। मोरियो ए मां॥
भावज बाई रो फलसै तांई साथ मोरला। मोरियो ए मां॥
बीरो बाई रो धोरे–धोरे साथ मोरला। मोरियो ए मां॥1॥

––00––

आलय ए माता थारो आगणो, ए भोळी चेरमी ले।
खेल लिया दिन चार, राय राती चेरमी ले।
आलय ए माता थारो बाटको, ए भोळी, चेरसी ले।
जीम लिया दिन चार, राय राती चेरमी ले।
आलय ए माता थारो चरखलो, ए भोळी चेरमी ले।
कात लिया दिन चार, राय राती चेरमी ले।
आलय ए माता थारो ढोलियो, ए भोळी चेरमी ले।
पोढ़ लिया दिन चार, राय राती चेरमी ले।
गिणी–मिणी दस–बीस, राय राती चेरमी ले।
एकज चिरमी घट गई, ए भोळी चेरमी ले।
घटियो–घटियो सहेल्यां रो साथ, राय सती चेरमी ले।
एकज चिरमी बंध गई, ए भोळी चेरमी ले।
बंधियो–बंधियो जवाई जी रो साथ, राय राती चेरमी ले॥2॥

––00––

साभार- बिश्नोई लोकगीत

लोकगीत हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। इन्हें संजोकर रखना हमारा दायित्व है। खेद का विषय है कि आज की युवा पीढ़ी लोकगीतों को भूलती जा रही है। माताओ–बहनों से अनुरोध है कि बिश्नोई समाज में विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले लोकगीतों को कलमबद्ध कर 'अमर ज्योति' को भेजें ताकि उन्हें प्रकाशित कर भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित किया जा सके।

–सम्पादक

लिछमणरामजी सियोल (वि.सं. 1910-92): व्यक्तित्व एवं कृतित्व

संवत् 1542 में उदलजी सियोल जाट से बिश्नोई बने थे। उन्हीं के पीढ़ी में आसोजी के गृहस्थ जीवन में कवि लिछमणजी का जन्म हुवा। ये सात भाइयों में सबसे छोटे थे। लिछमणजी ने पड़ियाल गांव को ही अपनी कर्मस्थली बनाया। आसोजी के बाकी 6 पुत्र अलग- अलग गांवों में बस गए। जांभोलाव जहां गुरु महाराज का तालाब जंभ सरोवर है, रणीसर जहां पूल्होजी की समाधि है, ननेऊ जहां बुआ तांतू का ससुराल का ठिकाना था। ये तीनों धाम स्थल पड़ियाल के अति निकट है। अत: कवि श्रेष्ठ ने गांव पड़ियाल की मरुभूमि को ही अपनी कर्मस्थली बनाया।

लिछमणजी द्वारा भारत भूमि का भ्रमण करने की बात भी सुनी जाती है। आपके विषय में कामरूप (असम) तक जाने का जिक्र भी सुनने को मिलता है, जैसे कि मानव की प्रवृति एवं जिज्ञासा होती है- पर्यटन करके भिन्न-भिन्न लोगों से मिलना, चर्चाएं करना, तीर्थ यात्राएं करना, धार्मिक पीठों की यात्राएं करना, अलौकिक शक्तियों के बारे में जानना, इहलोक-परलोक, जीव और ब्रह्म आदि जिज्ञासाओं को शांत करने के लिए उन्होंने अनेकों जगह भ्रमण किए थे, लेकिन भ्रमण के पश्चात् इसी मरूभूमि में धोरों, खेजड़ी की छांव के तले बैठकर भक्तिमार्ग की साखियों के माध्यम से जांभाणी पंथ को आगे बढ़ाया। उन्होंने अपने जीवन में बहुत लिखा होगा, लेकिन चार-पांच साखियां ही आज उपलब्ध है। उनकी वाणी के मुख्य विषय थे- सतगुरु, कैवल्य ज्ञान, ईश-भक्ति, सांसारिक निर्लिप्तता, संसार असारता, विष्णु सुमरण, सनातन धर्म परम्परा का पोषण, ब्रह्म ज्ञान, जीव व ब्रह्म। जंभ सरोवर (तालाब) की महिमा की साखी की कुछ पंक्तियां यहां प्रस्तुत हैं-

पन्दह सौ प्रकाश साल छाछटे में सही।
अंगद पुख अंधार वृहस्पत पांचम की कही।
वृहस्पत पांचम की कही, सो दिन नींव तालाब।
गोप प्रगट दाखियो, जो कोई जागणै न्यहाय।
लिछमण महात्म कह सुनायो, कर मन मोटी आस।

लिछमणजी के देवलोगमन की एक अद्भुत घटना है। उनके निधन के समय ग्रीष्म ऋतु थी। पानी पीने को उपलब्ध नहीं था। उनके कुटुम्बी एवं अन्य लोग उनकी पार्थिव देह को अंतिम संस्कार के लिए लेकर गए। अंतिम संस्कार कर दिया गया। इसके बाद स्नान करने की परम्परा है। पानी नहीं था। स्नान कैसे करेंगे। जनश्रुति है दिन ढलते एक दो बादल प्रकट हुए और अच्छी वर्षा कर दी। लोगों का स्नान भी हो गया और ताल-तलैया पानी से भर गये। ऐसा सौभाग्य हर किसी को नहीं मिलता है। यहां लिछमणजी रचित गुरु भक्ति के दोहे प्रस्तुत है-

गुरु बिन मुक्ति ना मिले, गुरु बिन ज्ञान न होय।
जोग इष्ट सिद्धांत को, गुरु बिन लहै न कोय॥1॥
ब्रह्मनिष्ठ गुरु तत्वमसि, ताको पूछत भेद।
सो ब्रह्म ज्ञान बतावसी, हरै अज्ञान भ्रम छेद॥2॥
वक्ता है षट शास्त्र को, षट उरमी को त्याग।
ताका मत वेदान्त है, ब्रह्म ज्ञान वैराग॥3॥
इन्द्री विषय अरु वासना, माया तज अज्ञान।
जोग जुगत जरणा जरो, सो पूरण ब्रह्म ज्ञान॥4॥
चंद सूर स्वासा लखे, लखे घात विपरीत।
स्वासा गिगन चढाय के, लेय काल को जीत॥5॥

लिछमणजी की एक साखी देखें-

सतगुरु कृपा करी मेरा जीवो, केवल ज्ञान बताओ
तां दिन भेद लहै मेरा जीवो, ब्रह्म ज्ञान सुध पायो।
ब्रह्मज्ञान पायो मन दृढायो, तजो विषय अरु वासना।
भगती चाहूं मोक्ष पाऊ, और कछु नहि आसना।

आनदेव कूं नांय धोकूं, नांव निज हृदय धरूं।
ता दिन आतम ज्ञान पायो, कृपा करी जंभ गुरु ॥1॥
भंवर गुंजार ध्यान धरो मेरा जीवो, प्रगटे दीपक माला।
अणभय ज्ञान भयो मेरा जीवो, हिरदे भया उजाला।
भयो घट में ज्ञान दीपक, जाग सुरता देखिये।
ठाम ठाम सब वस्तु दरसे, अलख पड़दे पेखिये।
रतन पदार्थ मांह लाधो, हृदय कवल दरसावना।
भंवर भमंग गुंजार मांही, हुयो हृदय चानणा ॥2॥
नाभी सूं नाड़ी चली मेरा जीवो, वंक एक नाड़ बखाणी।
ऊंची गिगन गई मेरा जीवो, भेद कोई बिरला जाणी।
भेद बिरला संत जाणै, चढ्यो गिगन अटारियां।
निरत सूरत को ख्याल देख्यो चंद सूर दोय नाड़ियां
नजदीक नैणां लाल झांई, जोत दर्श लिव लावणा।
बाये अंग बंक नाड़ि पिंगला, बंक नाड़ी रस पीवणा ॥3॥
बिना पग (बिना) कर मेरा जीवो, बिना मुख हरिगुण गावै।
सरवण बिन शब्द सुणो मेरा जीवो, कर बिन माल बजावै।
अनहद बाजा गिगन बाजै ब्रह्म रूप (हो) पूगे।
त्रिवेणी तट हंस अधर बैठो, अमोक मोती चुगे।
जोत झिलमिल इमी बरसे तड़-तड़ चमक बादल बिना।
बिना पांव नटवा निरत नाचै, ररंकार धुन बिना ॥4॥
जीवत मुक्ति भई मेरा जीवो, मिट गई त्रिविध वासा।
जामण मरण मिटा मेरा जीवो, निर्भय भयो निरासा।
भयो निर्भय सुण सतगुरु की, काल प्रबल ते ना डंरू।
द्वार दसवैं गगन चढ कर सोह सिकर डेरा करूं।
सत चित आनंद भेव निरगुण धुंध मंडल पावई।
लिछमण पद सायुज्य पायो, मुक्ति जीवत ही भई ॥5॥

सोहनलालजी सोढा (जैसला) ने अपनी पुस्तक में लिछमणरामजी का एक सवैया दिया है, देखिए-

पर नारी कर प्रीत लाज सब कुल की लाजै।
चित्र में रहे न चैन वगत पर लाठी वाजै।
फिरै वैतूळ भूत ज्यौं, काम कुछ बाप लजावै।
मूरख मनड़ै मोद, जन्म मां आप लजावै।
लछमणदास लारै लगा, ऊरमत जाय हजार की।
कर देखो कोई नर सुघड़, प्रती कहां पर नार की।

इनकी एक अन्य रचना संगीत प्रह्लाद चरित्र मिलती है, जो वि.स. 1986 में श्री वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस मुम्बई से प्रकाशित है। इसके प्रकाशक हैं- खेमराज श्री कृष्णदास। इसमें दोहा, चौबोला आदि 329 छंद हैं। इसे गाया भी जा सकता है। इस काव्य में कुम्हारी- प्रह्लाद, माता-प्रह्लाद, राजा-रानी, प्रह्लाद-बुआ, पण्डित-राजा आदि के संवाद बड़े महत्वपूर्ण हैं। प्रह्लाद चरित्र का अधिक प्रचलन जांभाणी साहित्य में ही है। इनसे पूर्व भी कवि केसोजी, हरचन्दजी ढूकिया, ऊदोजी अडिंग, साहबरामजी राहड़ आदि ने प्रह्लाद चरित्र लिखे थे। उसी परम्परा में इन्होंने इसकी रचना की थी। इनके वंशज आज भी पड़ियाल गांव में रहते हैं। प्रसिद्ध कवि भंवरलालजी सियोल इनके प्रपौत्र हैं। इनके वंशज से इनकी अन्य अप्रकाशित रचनाओं को प्रकाश में लाने की अपेक्षा है। यहां कवि लिछमणजी के प्रह्लाद चरित्र आख्यान काव्य के प्रथम एवं अन्तिम छंद देखें-

दोहा-

पण्डित वेद विचारते, देवी के दरबार।
नगरकोट वैकुंठ में, बैठी आसन मार॥

अन्तिम छंद (चौबोला)

प्रभुजी, हरि भए अंतरधान रूप नरसिंह दिखाके।
सकल सभा सुनि लेउ कहूं मैं लीला गाके॥
प्रभुजी, कहे लछिमन कर जोड़ मन में हरि शीश नवा के।
यम को कट जाये त्रास बसो वैकुण्ठ जाके॥

-डॉ. कृष्ण लाल बिश्नोई
बी-111, बिश्नोई भवन, समतानगर,
लालगढ पलेस के पास, बीकानेर
जिला बीकानेर (राज.)

प्राचीनकाल की प्रसिद्ध विदुषी नारियाँ

भारतवर्ष के इतिहास में ऋग्वैदिक काल का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि ऋग्वेद भारत का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। इसी ग्रन्थ से प्राचीन भारतीय समाज पर यथेष्ट प्रभाव पड़ता है। उस समय नारी शक्ति की प्रतीक और पूज्य समझी जाती थी। ऋग्वैदिक काल में अनेक विदूषियाँ हुई जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त कर समाज और राष्ट्र को गौरवान्वित किया जिनमें घोषा, लोपामुद्रा और अपाला का नाम प्रमुख है। इसके अतिरिक्त कई अन्य विदूषियाँ भी हुई जिनको भाषा और साहित्य में पूर्ण पाण्डित्य प्राप्त था। इनमें रोमशा विश्ववारा, वाक् और इन्द्राणी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में इनका योगदान सराहनीय था जिनके कारण ऋग्वैदिक समाज उन्नति के पथ पर आरुढ़ हो सका। वैदिककाल की नारियों को दो कालों में बाँटकर देखा जा सकता है।

क) ऋग्वैदिक काल

ख) उत्तर वैदिक काल

ऋग्वैदिक काल की नारियाँ

ऋग्वैदिक काल में ऐसी कई नारियाँ थीं, जिन्होंने कई वैदिक ऋचाओं की पूरी रचना की जिनकी संख्या संभवत: सत्ताईस थी। इन नारियों को "ऋषिका अथवा ब्रह्मवादिनी" कहते हैं।[1] परन्तु कुछ नारियाँ इस प्रकार की थी जो इन ऋचाओं का मात्र अपने मधुर स्वरों में गायन करती थीं। ऋग्वेद के अनेक सूक्तों में यह संकेत मिलता है कि महिलाओं की रचनाएं, संगीत और काव्य दोनों ही दृष्टियों से पुरुष रचनाकारों से किसी भी अर्थ में कम नहीं थीं। इन स्त्रियों ने उस समय के प्रबल मानवता के कल्याण के लिए अपनी ऋचाओं में प्रार्थना की थी। इसके अतिरिक्त इस युग की कुछ महिलाओं ने शिक्षा के अन्य क्षेत्रों में भी विद्वता प्राप्त करने के अनेक उदाहरण प्राप्त हैं।[2] इन ऋषिकाओं एवं विदूषियों के विवरण उपलब्ध हैं।

घोषा:- ऋग्वेद में वर्णित ऋषिकाओं में घोषा का स्थान सर्वश्रेष्ठ था, क्योंकि इनका उल्लेख ऋग्वेद में बार-बार आता है।[3] घोषा एक ऐसे राजकुल की कन्या थी जो अपनी विद्वता और पाण्डित्य के लिए प्रसिद्ध थी। उसके पिता का नाम कक्षीवत् था तथा पितामह का नाम दीर्घतम था। इन दोनों ने ही भगवान अश्विन, जो देवताओं के चिकित्सक हैं, के अनेक ऋचाओं की रचना की। कन्या होते हुए भी घोष अपनी इच्छानुसार योग्य वर प्राप्त करने में असमर्थ थी, वह श्वेत कुष्ठ रोग से पीड़ित थी। घोषा ने भगवान अश्विनी की प्रशंसा में दो ऋचाओं का निर्माण किया। परिणामस्वरूप उसकी प्रार्थनाओं से प्रसन्न होकर अश्विनी ने उसे रोगमुक्त कर उसे विवाह योग्य बना दिया। उसका विवाह कक्षीवान जैसे योग्यवर के साथ सम्पन्न हुआ।

अपाला: अपाला अत्रि ऋषि के कुल की कन्या थी। इन्होंने स्वतन्त्र रूप से ऋग्वैदिक ऋचाओं का रचना की थी। ऋग्वेद के दसवें मण्डल की इक्यानवीं ऋचा की रचना इसके द्वारा की गई थी। इसी ग्रन्थ के पाचवें मण्डल में उसने अग्नि का आह्वान किया। अपाला चर्मरोग से पीड़ित थी जिसके कारण पति ने उसका परित्याग कर दिया था। उसने अपनी ऋचाओं द्वारा अनूठे ढंग से भगवान इन्द्र का आह्वान किया , जिसके फलस्वरूप वह रोगमुक्त हो गई। जिसका उल्लेख ऋग्वेद के आठवें मण्डल में है।[4] इन्द्र को उसने उनका प्रिय सोमरस पिलाया, जिससे तृप्त एवं प्रसन्न होकर उन्होंने उसे रोगमुक्त कर सुन्दर बना दिया।[5] इन तथ्यों से अपाला की विद्वता का परिचय मिलता है।

उर्वशी: उर्वशी ऋषिका इन्द्रलोक की अभिन्न सुन्दरी अप्सरा थी। इसका विवाह राजा पुरुरवा के साथ हुआ था, जिससे उन्हें एक पुत्र रत्न की प्राप्ति भी हुई थी। संगीत तथा नृत्य में पारंगत होते हुए भी उसने ऋग्वेद की अनेक ऋचाओं की रचना की।[6] उनमें दसवें मण्डल की ऋचा संख्या 15 की 2, 5, 7, 9, 11, 13, 15, 16 व 18 उल्लेखनीय है।

यमी: यमी एक शक्तिशाली ऋषिका रही है। उसने अपने भ्राताओं के सहयोग से दसवें मण्डल की दसवीं ऋचा की रचना की। इसकी मुख्य गायिका स्वयं यमि थी।[7] ऋग्वेद संहिता में उसका उल्लेख अपने ढंग से एक स्त्री के रूप में हुआ है जो उन्मुक्त और अद्वितीय है।

सूर्या: सविता तथा सूर्य की पुत्री सूर्या भी इस युग की एक महान ऋषिका थी। सोम के साथ अपने विवाह गाथा को उसने स्वयं ही ऋग्वेद में प्रस्तुत किया है। यह ऋचा पारस्परिक शैली में नियोजित है।[8]

सूर्य की पुत्री सूर्या ही किन्हीं के मन में यह ऊषा ही है। विवाह सूत्र में सूर्या के विवाह का विस्तार से वर्णन है। सूर्या को बहन बनाने वाले अश्विनी हैं। अश्विनी सूर्या के द्विचक्र प्रकट रूपी मन में आते हैं। तब आत्मा और इन्द्रियाँ अश्विनी से पूछती हैं, यह तीसरा चक्र कहाँ है- "क्वैकं चक्रं वामासीत् क्व देष्टाय तस्थतु:" इस तृतीय चक्र को ज्ञानी और योगी ही जान पाते हैं- अयैक चक्रं यद् गुहा तद्धातय इङ्गद्विदु:।[9]

वेद में सूर्य को स्थावर जंगम जगत की आत्मा कहा गया है- "सूर्या आत्मा जगतस्तस्थुष च"[10]

वाक: वाक ऋषि अम्रिना की पुत्री थी। इसने ऋग्वेद के दसवें मण्डल की कुछ ऋचाओं की रचना की थी, जो आज देवीसूक्त के नाम से प्रसिद्ध हैं।[11] सम्भवत: शाक्त उपासकों की यह आराध्य देवी है किन्तु उत्तरकालीन वैदिक गन्थों का विवरण इससे भिन्न है। इसके अनुसार इस प्रकार की कोई ऋषिका नहीं वरन् ऋग्वेद में इस शब्द का प्रयोग अनंकार के रूप में किया गया है और इसी आधार पर कालान्तर में विद्या की देवी सरस्वती के रूप में इसकी कल्पना की गई है।[12]

मनुष्य की चेतना या बुद्धि की तीन देवियाँ वेद में प्रस्तुत हैं-

सा नो यज्ञं भारती मनुष्यवदिह चेतयन्ती।
तिस्तो देवी बंहिरिद स्योनं सरस्वती स्वपस: सदन्तु।[13]

ये तीनों ही बुद्धि की देवियाँ- भारती, इला और सरस्वती हैं और सबसे बढ़कर वाक्रूपी सरस्वती का दर्शन वेद का एक गूढ़ तत्व है।

वाक्, माया और अदिति- वेद में ये तीनों नाम प्रकृति या शक्ति के हैं जैसा कि निम्न मंत्रों से प्रकट है।

वाक्-अहं रुद्रेभिर्वसुभि चराम्यहमादित्यैरुत विश्व देवै:।
परो दिवापर एना पृपिके तावतोमहिमाना संबभूव।[14]

वाक् ही रुद्र वसु, आदित्य और विश्वदेवो के साथ विचरती है। आकाश और पृथ्वी से परे यह शक्ति के रूप में व्याप्त है। इसी को असुर वरुण की माया देवमाया भी कहा गया है यह माया संसार की निर्माण शक्ति या सांख्य की प्रकृति ही है। माया का वर्णन वेद के अनेक मंत्रों में बिखरा हुआ है। यथा 15 इत्यादि माया की उत्पत्ति माया से ही होती है। **"माया जज्ञे मायया मातलीपरि"।**[16]

समस्त नाम रूप संसार वाक् या माया का ही विकार है। वेद में वाक् तत्व का दर्शन सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। वाक् को ब्रह्म की पराशक्ति का सृष्टि का परम तत्व माना गया है। वाक् का आकाश और श्रोत्रेन्द्रिय से सम्बन्ध है। वाक् के वेद में 57 नाम प्रसिद्ध हैं जो यास्क के निघण्टू में पढे गये हैं। इनमें से सरस्वती शब्द वाक् के लिए बहुधा प्रयुक्त हुआ है, यह बुद्धि की देवी मानी जाती है।

लोपामुद्रा: ऋग्वेद की द्वितीय ऋषिका लोपामुद्रा 17 अगस्त्य मुनि की पत्नी थी। उसने पति के साथ मिलकर ऋग्वेद की एक उत्कृष्ट ऋचा की रचना की। इनके दो छन्दों 18 की रचना स्वयं लोपामुद्रा ने की है । इन छन्दों में उनके प्रेमपूर्ण वार्तालाप का वर्णन है। लोपामुद्रा अपने पति से विनम्रतापूर्वक याचना करती है कि वह उसके प्रति प्यार एवं सौहार्दपूर्ण व्यवहार करें। इस ऋचा के अन्तिम छन्द से यह प्रतीत होता है कि लोपामुद्रा की याचना निष्फल नहीं हुई और कालान्तर में अगस्त्य मुनि ने अपने धार्मिक अनुष्ठानों के साथ गृहस्थ धर्म का भी पालन किया। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के सूक्त 179 के 1-6 मंत्रों में उसने प्रार्थना की है कि प्रजा को उत्पन्न करके उसका भली प्रकार

पालन-पोषण करना चाहिए तभी देव प्रसन्न होते हैं।

विश्ववारा: अत्रि ऋषि के कुल की द्वितीय कन्या विश्ववारा भी वैदिककाल की प्रसिद्ध ऋषिका थी।[19] उसकी ऋग्वैदिक ऋचाओं की रचना पाँचवें मण्डल में मिलती है जो 6 पंक्तियों में निबद्ध है। इन ऋचाओं में वह सफल वैवाहिक जीवन की प्रार्थना करती है। एक अन्य ऋचा में भी उसने अपने पारिवारिक जीवन के सुख-दु:ख का विवरण प्रस्तुत किया है। विश्ववारा ने मात्र भावपूर्ण ऋचाओं की रचना ही नहीं की, वरन् अपने अधिकारों के आधार पर वह स्वयं यज्ञ आदि भी सम्पन्न करती थी। ऋग्वेद की जितनी भी ऋषिकाओं ने ऋचाओं के माध्यम से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त किया है, उसमें विश्ववारा की अभिव्यक्ति विद्वतापूर्ण ही नहीं वरन् अति प्रशंसनीय है। इससे यह परिलक्षित होता है कि प्राय: सभी ऋषिकाएँ भावनाओं को स्पष्ट रूप से परिलक्षित करने में निपुण थी।[20]

इन्द्राणी: इन्द्र की शक्ति इन्द्राणी थी। उसने भी ऋग्वेद की अनेक ऋचाओं की रचना की थी। जिसमें ऋग्वेद के दसवें मण्डल की ऋचा संख्या'6 की 2, 4-2, 9, 10, 15, 18, 22 और 23 पंक्तियाँ उल्लेखनीय है क्योंकि उसका पाठ उसने स्वयं किया है। उसने स्वतन्त्र ऋषिका के रूप में भी एक महत्वपूर्ण ऋचा की रचना की थी, जिसका विषय 'ए' ईर्ष्यालु पत्नी का वशीकरण था। 138 इन्द्र एक अन्य स्त्री पर आसक्त थे। एतदर्थ, उनको अपने वश में करने के लिए एक विशेष जड़ी की खोज करते हुए इस मंत्र की रचना की। शचीपोलोभी भी सम्भवत: इन्द्राणी का ही नाम था तथा इस नाम से उसने एक और ऋचा की रचना की थी।[21] इस मंत्र में उसने उन प्रतिध्वनियों पर विजय का वर्णन किया है, जो इन्द्र को अपनी ओर आकृष्ट करना चाहती थी। इन्द्राणी रचित ये दोनों ऋचाएँ अलंकार और भाषा की दृष्टि से ओजस्वी हैं तथा गायन योग्य है। इन्द्र की माताओं ने भी ऋचाओं की रचना की थी।[22] यह विदित होता है कि इन्द्र परिवार के सभी सदस्य काव्य रचना में निपुण थे। इन तथ्यों से यह प्रमाणित होता है कि ऋग्वैदिक काल में उच्च कुलों में नारी शिक्षा चरमोत्कर्ष पर थी।[23]

रोमशा: रोमशा कक्षीवान की दूसरी पत्नी थी। रोमशा के पिता स्वानय और पितामह भाव्य थे। उसने अपनी सुन्दर कल्पनाओं एवं कोमल भावनाओं की सहायता से ऋग्वेद के एक अंश की रचना की थी, जो अतीव प्रशंसनीय है। वह अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करते हुए कहती है कि वह 'गन्धार की मेमनों की तरह कोमल और सौम्य है' विवाहोपरान्त उसने अपने इस अंश को अपने श्वसुर को सुनाया[24] उन्होंने अपने पति को अपने यौवनावस्था में प्रवेश करने की सहर्ष सूचना दी और भोग विलास की कामना की। इस प्रकार की स्पष्ट अभिव्यक्ति उसकी ऋचाओं में परिलक्षित होती है। अतएव रोमशा भी एक मान्य विदुषी थी।

गोधा: यह ऋषि वसुकर की पत्नी अगस्त्य मुनि की पुत्री थी। उसने मानधात की अधूरी रचना को पूर्ण किया। यह ऋग्वेद के दसवें मण्डल की ऋचा संख्या 134 की छठी पंक्ति का उत्तरार्ध भाग है। संभवत: इसकी सातवीं पंक्ति की रचना भी गोधा ने ही की थी।[25]

मानधातृ: इन्होंने दसवें मण्डल की संख्या134 की प्रथम पंक्तियों की तथा छठी पंक्ति के अधोभाग की रचना की है। इन पंक्तियों की रचना इन्द्र की आराधना में की गई है।[26]

ममता: ऋग्वेद के दसवें ऋचा की द्वितीय पंक्ति की रचना इसी ऋषिका ने की थी।[27]

जुहू- ब्रह्मा की पत्नी जुहू ने ऋग्वेद के दसवें मंडल की ऋचा की संख्या 109 की रचना की है।[28]

उपरोक्त प्रमुख ऋषिकाओं के अतिरिक्त ऋग्वैदिक काल की विदूषियाँ भी थीं जिनको भाषा एवं साहित्य में पूर्ण पाण्डित्य प्राप्त था। इसमें अरुन्धती, अदिति, मेधा, दक्षिणा, जरिता, सागा, वागाभृती, रात्रि सरमा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।[29]

इन तथ्यों से प्रमाणित होता है कि ऋग्वैदिक काल में भाषा और साहित्य के क्षेत्र में नारियों ने यथेष्ट ज्ञान

प्राप्त किया था। जिसका उदाहरण ऋग्वेद की ऋचाओं की रचनाओं से प्रदर्शित किया गया है। इनको ब्रह्मवादिनी की संज्ञा दी गई है। संभवत: ब्रह्मचर्य जीवन जीने की भी नारियों को स्वतन्त्रता थी। इस काल में ऐसी अनेक नारियाँ हुई थी, जिन्होंने ब्रह्मचारिणी के रूप में शिक्षा ग्रहण की और शिक्षोपरान्त विवाह किया।[30] इसके अतिरिक्त कुछ अविवाहित कन्याओं का भी उल्लेख मिलता है। जिन्होंने विद्या की आराधना में जीवन समर्पित कर दिया। इस प्रकार इस युग का विदुषियों की योग्यताएँ बहुमुखी थीं। वह मात्र मंत्रों और ऋचाओं की रचना ही नहीं वरन् सैनिक शिक्षा, संगही, नृत्य, काव्य एवं नाटक की रचना में भी प्रवीण थी। धार्मिक क्षेत्र में उन्हें पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त थी। परिणामस्वरूप वे पति के साथ धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेती थी। निष्कर्षत: नारी शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में अग्रगण्य थी। एतदर्थ ऋग्वैदिक भारत में नारी शिक्षा जितनी आज विकसित है, उससे कहीं उन्नत ऋग्वैदिक काल में थी।

उत्तर वैदिक काल

उत्तर वैदिक काल में नारी शिक्षा के क्षेत्र में कुछ आमूल परिवर्तन हुए फिर भी साक्ष्यों के आधार पर इस काल की महिलाएँ शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में प्रवेश ले चुकी थी और समाज में विदुषी के रूप में सम्मानित होने लगी थी। अत: यह कहना अक्षरश: सत्य है कि धर्म और शिक्षा दोनों में वे अग्रणी थी। इस काल की विदुषियों में प्रमुख हैं-

गार्गी: उत्तर वैदिक विदुषियों में गार्गी का व्यक्तित्व दैदीप्यमान प्रकाश पुंज की तरह है तथा विद्वतारूपी आकाश गंगा में तेजस्वी नक्षत्र के समान सुशोभित है। उसकी विद्वता के सन्दर्भ में अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। बृहदारण्यक उपनिषद के अनुसार[31] विदेह राजा ने एक बार अश्वमेघ यज्ञ का आयोजन किया, जिसमें उन्होंने विद्वानों की एक सभा बुलाई। इस सभा के आयोजन का उद्देश्य यह जानना था कि सर्वश्रेष्ठ विद्वान कौन है। इस हेतु शास्त्रार्थ का आयोजन किया गया। सर्वश्रेष्ठ विद्वान् को स्वर्णमण्डित शृंग वाली एक सहस्र गाय पुरस्कार स्वरुप देने की योजना थी। फलस्वरूप देशदेशान्तर से अनेक विद्वान इस सभा में भाग लेने आए। विद्वानों की इस सभा में अनेक ऋषिकाओं के साथ गार्गी भी उपस्थित थीं। महर्षि याज्ञवल्क्य ने सभाभवन में प्रवेश करते ही अपने शिष्यों को यह आदेश दिया कि वे सभी गायों को खोलकर ले जाएँ तथा उनकी देख-रेख करें। यह देख विद्वानों की उस मण्डली में खलबली मच गई और तुरन्त उनकी विद्वता को चुनौती दी गई। इस विरोधी मण्डली में गार्गी भी सम्मिलित थी। अन्य विद्वानों के साथ गार्गी ने भी दर्शन व ज्ञान संबन्धी अनेक प्रश्न महर्षि याज्ञवल्क्य से किये किन्तु तत्वज्ञान सम्बन्धी ये प्रश्न इतने सूक्ष्म एवं कठिन थे कि उन्होंने सार्वजनिक सभा में इनका उत्तर देना अस्वीकार किया। अन्त में महर्षि याज्ञवल्क्य को यह कहना पड़ा- 'ओ गार्गी अब और अधिक नहीं, मेरी इतनी कठिन परीक्षा न लो'।[32] तदुपरान्त गार्गी शान्त हो गई। वे सहस्र गायें महर्षि याज्ञवल्क्य को दे दी गईं, क्योंकि गार्गी ने भी अन्त में स्वीकार किया, वे ही सर्वश्रेष्ठ विद्वान हैं और उनको पराजित करना असम्भव है। इस प्रकार नि:संदेह गार्गी को उत्तर वैदिक कालीन विदुषियों में सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त था। तत्व ज्ञान एवं मीमांसा संबन्धी उसके ज्ञान अलौकिक थे।[33]

मैत्रेयी: बृहदारण्यक उपनिषद्[34] में एक अन्य सुसंस्कृत एवं विदुषी महिला का विवरण मिलता है, जिसका नाम मैत्रयी था। वह याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रयी विख्यात दार्शनिक थी जिसकी रुचि अलंकारों में न होकर दर्शनशास्त्र में थी। मैत्रेयी को संभवत: कोई सन्तान नहीं थी। फलस्वरूप वह संसार की ओर से उदासीन थी।

महर्षि याज्ञवल्क्य की दो पत्नियाँ थी। एक का नाम कात्यायनी और दूसरे का मैत्रेयी था। गृहस्थ जीवन समाप्त कर जब याज्ञवल्क्य ने वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करना चाहा तथा सम्पत्ति को दोनों पत्नियों में विभाजन करना चाहा तो मैत्रयी ने सम्पत्ति को केवल विलासिता जीवन मानकर लेने से इन्कार कर दिया और तत्वज्ञान की प्राप्ति को प्राथमिकता देते हुए महर्षि

के साथ आश्रम में जाकर तत्वज्ञान की शिक्षा प्राप्त की और विदुषी बन गई।[35]

पश्यास्वरितः कोषीतकि ब्राह्मण में पश्यास्वरित नामक विदुषी का उल्लेख है। उसने समस्त उत्तर भारत का भ्रमण किया था ताकि वह विशिष्ट शिक्षा प्राप्त कर ऐसी विदुषी बन जाए कि विद्वता के आधार पर 'वाक्' की उपाधि ग्रहण कर सके। यह विद्या देवी सरस्वती के गुणों से अपने को विभूषित करना चाहती थी। इससे भी ज्ञात होता है कि इस काल में नारी-शिक्षा पराकाष्ठा पर थी।

उमा हेमवतीः इस विदुषी का वर्णन केन उपनिषद में मिलता है।[36] इस उपनिषद में हेमवती द्वारा ब्राह्मण ग्रन्थों पर की गई वार्ताओं का वर्णन है जिससे यह परिलक्षित होता है कि उसने इन ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया था और उस काल की विदुषियों में उनका स्थान प्रमुख था।

आश्वालयन[37] और शांख्यायन[38] गृह्य सूत्रों में भी ऋषिकाओं का नाम है, जो उस काल की प्रसिद्ध विदुषियाँ थी। गार्गी, बड़वा, प्रातीयेयी तथा सुलभा मैत्रयी ही तीन ऋषिकाएँ थीं जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त थी। इनमें गार्गी और सुलभा, मैत्रेयी का विस्तृत विवरण तो तत्कालीन ग्रन्थों में उपलब्ध है, किन्तु बड़वा प्रतीयोयी का कोई विशेष वर्णन नहीं मिलता। फिर भी इन साक्ष्यों के आधार पर इतना तो कहा ही जा सकता है कि नारी शिक्षा इतनी अधिक विकसित थी कि इस युग में अनेक विदुषियाँ उत्पन्न हुई।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. मनु 2/129; 2. ऋग्वेद 3/33/13; 3. ' ' 1/117/10.36; 4. ' ' 8/91/1-7; 5. मजूमदार आर. सी. ग्रेट वीमेन आफ इण्डिया पृ. 134; 6. ऋग्वेद 10/94; 7. ' ' 10/151; 8. ' ' 10/85; 9. ' ' 10/85/16; 10. ' ' 1/1/5/1; 11. ' ' 8/10/125; 12. मजूमदार आर.सी. ग्रेट वीमेन आफ इण्डिया पृ. 130, 133; 13. ऋग्वेद 1/110/8; 14. ' ' 1/02/2, 8; 15. ' ' 10/77, 1/164; 16. अथर्ववेद 8/915; 17. ऋग्वेद 10/39/40; 18. ऋग्वेद 1/179/1-2; 19. ' ' 5/28/3; 20. मजूमदार आर.सी. ग्रेट वीमेन आफ इण्डिया पृ. 133; 21. ऋग्वेद 10/159; 22. ' ' 10/153; 23. ' ' उपाध्याय वी.एस. वीमेन इन ऋग्वेद पृ. 182; 24. ऋग्वेद 1/136/7

-डॉ. वीना विश्नोई
संस्कृत विभाग
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

मुट्ठी में है लाल गुलाल

मोनू का मुंह पुता लाल से,
सोमू की पीली गुलाल से।
कुर्ता भीगा मानव का,
सिद्धि के हैं गीले बाल।
मुट्ठी में है लाल गुलाल॥

चुनियां को मुनियां ने पकड़ा,
नीला रंग गालों पर चुपड़ा।
इतना रगड़ा जोर-जोर से,
फूल गए हैं दोनों गाल।

मुट्ठी में है लाल गुलाल॥

डूग्गू पीला रंग ले आया,
यतीन ने भी हरा रंग उड़ाया।
रंग लगाया एक-दूजे को,
लड़े-भिड़े थे परकी साल।
मुट्ठी में है लाल गुलाल॥

कुछ के हाथों में पिचकारी,
गुब्बारों की मारा-मारी।

रंग-बिरंगे सबके कपड़े,
रंग-रंगीले सबके भाल।
मुट्ठी में है लाल गुलाल॥

इन्द्रधनुष धरती पर उतरा,
रंगा, रंग से कतरा-कतरा।
नाच रहे हैं सब मस्ती में,
बहुत मजा आया इस साल।
मुट्ठी में है लाल गुलाल॥

-सिद्धि, बढ़वाली ढाणी, हिसार

सहज जीवन की अभिव्यक्ति : जाम्भाणी साहित्य

वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी का है। सूचना प्रौद्योगिकी ने विश्व-ग्राम की संकल्पना को साकार कर दिया है। विश्व के किसी भी कोने में घटित घटना का शीघ्र ही पता चल जाता है। समस्त सूचना-तंत्र सिमटकर बस एक मोबाइल में समाहित हो गया है। सूचना प्रेषण के बाकि साधन धीरे-धीरे गौण हो रहे हैं। आज कोई भी व्यक्ति मोबाइल की सहायता से कहीं से भी कोई भी संदेश प्रकाशित और प्रसारित कर सकता है। आज लगभग हर सेवा, वस्तु और मनोरंजन मानव की अंगुलियों से अछूता नहीं है। बस मोबाइल से ऑर्डर कीजिए, सामान हाजिर। उपयोग कीजिए और औरों को भी इससे अवगत कराइये, दिखाइये और आत्मतुष्ट होते जाइये। अर्थात सोशल मीडिया पर प्रदर्शित कीजिए। यहां तक की अपनी निजी प्रयोग की वस्तुएं व आत्मानुभूति को भी सोशल मीडिया के माध्यम से व्यक्त कीजिए।

आज हर कोई सूचना प्रौद्योगिकी के इस जाल में फंसा है। हर कोई आत्म-प्रदर्शन की इस अंधी दौड़ में शामिल होता जा रहा है और आभासी दुनिया की जकड़ में फंसता जा रहा है। प्रदर्शनप्रियता का यह ज्वर कुछ ऐसा चढ़ रहा है कि समय-असमय, स्थान-अस्थान सब गौण हो चले हैं, बस अब सब कुछ ऑनलाइन हो चला है। जो कुछ भी खा रहे हैं, पी रहे हैं या पहन रहे हैं, उनका भी प्रदर्शन हो रहा है। इसी प्रदर्शनप्रियता का लाभ बाजार उठा रहा है। कंपनियों का कार्य अब वस्तु उत्पादन और उसकी बिक्री न होकर ब्रांड गढ़ना हो गया है। अरे! ये पकवान तो खास लोग ही खाते हैं या यहां आकर खास लोग खाते हैं, -तो यू आर स्पेशल नाउ! या ये कपड़े या जूते तो ब्रांडिड हैं। पहले भी लोग इन सबका प्रदर्शन करते थे, परंतु उनमें इनकी इसकी लत नहीं थी। अब तो खासकर युवाओं का लक्ष्य ही कथित ब्रांडिड वस्तुएं पाना और उनका प्रदर्शन करना रह गया है। क्या मानव जीवन का यही लक्ष्य है।

आज 6-8 वर्ष की आयु का बालक ही मोबाइल या टैब की जिद्द करता है। जो समय संस्कार ग्रहण करने का है, उसे आभासी दुनियां में नष्ट किया जा रहा है। आभासी खेल (मोबाइल गेम) से बच्चे आत्महत्या तक कर रहे हैं, अभिभावक फिर भी नहीं चेत रहे। चेते भी कैसे, मां-बाप स्वयं मोबाइल में दिन-रात व्यस्त हैं। ऐसे में संतान को जो वातावरण मिल रहा है उसमें वैसी ही शिक्षा ग्रहण कर रहा है। अगर मां-बाप अध्ययनशील हैं और पुस्तकें पढ़ते हैं तो बालक भी वैसा ही करेगा। मात्र आज्ञा या आदेश देने से कुछ न होगा। जैसा की गुरु जाम्भोजी ने कहा है **'पहले किरिया आप कमाईये, तो औरां न फरमाइये'**।

सोशल मीडिया की लत लगने का एक प्रमुख कारण अध्ययन की कमी है। साहित्य से दूरी है। क्या मानव जीवन का लक्ष्य ज्ञान पिपासा को छोड़, प्रदर्शनप्रियता होना चाहिए/सर्वथा नहीं। साहित्य से दूर होने से मनुष्य जीवन मूल्यों को तिलांजलि देकर बुराइयोंका दास बनता जा रहा है। जो साधन मनुष्य के उपयोग हेतु बने हैं आज वो साधन मनुष्य का उपयोग कर रहे हैं।

वर्तमान समय में तकनीकी जानकारी आवश्यक है। मनुष्य को आधुनिक तकनीक का उपयोग करना चाहिए किंतु तकनीक का दास बनना सर्वथा अनुचित है। वर्तमान जैसी आंडबरप्रियता अथवा सामाजिक रुढ़ियां समय-समय पर सिर उठाती रही

हैं। मध्यकाल में भी अनेक कुरीतियां विद्यमान थी और जब मनुष्य व्यर्थ के आडंबरों में जकड़ा हुआ था तब गुरु जाम्भोजी ने **'चौसठ जोगन, बावन भेरूं'** को नकारते हुए बिश्नोई पंथ द्वारा मानव को सहज जीवन की ओर प्रवृत किया। गुरु जाम्भोजी द्वारा प्रदत पंथ पर चलकर बिश्नोई समाज ने विभिन्न प्रकार की सामाजिक कुरीतियों, पाखंडों और आडंबरों आदि से मुक्त होकर सहज जीवनचर्या अपनाई। इससे न बिश्नोइयों ने लौकिक विकास किया अपितु आध्यात्मिकता के उच्च सोपान पर भी आरोपित हुए।

गुरु जाम्भोजी के पश्चात् अनेक जाम्भाणी संतों ने गुरु जाम्भोजी के 'जीवा जुगति-मुवां मुक्ति' के मार्ग की अलख को जागृत रखा और मानव को विभिन्न भ्रमों से बचाए रखा। संसार में इस प्रकार के सांसारिक जीवों अर्थात सांसारिक कार्यों में लिप्त मानव के बारे में वील्होजी कहते हैं-

'दुनिया नाचे गाजे बाजे, ताने कगू न दांवू।
दुनिया के रंग सब कोई राचै, दीन रचे सो जाणे।'

जो संसार के रंग में रंग गया अर्थात् जो सांसारिक आडम्बरों में लिप्त है, उनके पास कोई ज्ञान नहीं है। वास्तविक ज्ञानी वही है जिसने धर्म की राह पकड़ी है और इस राह को वही पकड़ सकता है जो जीवन की भागम-भाग से मुक्त होकर आध्यात्मिक ज्ञान की ओर अग्रसर होता है।

'जो नर दावो छोड़यो मेर चुकाई, राह तैतीसां की जाणी'

इस प्रकार का ज्ञान होने पर समस्त वैर-भाव तिरोहित हो जाते हैं तथा मनुष्य मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर होता है। इस हेतु गुरु जाम्भोजी ने कहा है कि-

'ग्यान खडंगु जथा हाथे, कुण होयसी हमारा रिपु'

अर्थात् जिसके पास ज्ञान रूपी खड्ग है, उसका शत्रु कौन हो सकता है। जिसने वास्तविक ज्ञान प्राप्त कर लिया है, वह वाद-विवाद से मुक्त हो जाता है। प्रदर्शन-प्रियता, भौतिकवादी अन्धानुसरण आदि लालसाएं समाप्त हो जाती हैं तथा मनुष्य मन-मुखी से गुरु मुखी होकर सामाजिक एवं आध्यात्मिक जीवन की उच्चता प्राप्त करता है व जीवनोपरांत मोक्ष का अधिकारी हो जाता है।

-अनिशा बाला बिश्नोई
गांव रत्ता खेड़ा, तहसील रतिया
हरियाणा

हमारे वतन की मीठी याद, दिल को हमारे चुरा ले जाती है
वहां, जहां सतरंगी रंगों में सजी रंगीली होली आती है
जहां पिचकारी की धार और गुलाल की बौछार होती है
लाल गुलाबी नीले पीले, हर रंग की बहार होती है
जहां रंगों में रंगा प्यार का मौसम हर दिल में आता है
जहां बच्चे बूढ़े और जवान सब पर यह रंग चढ़ जाता है
जहां मिठाइयों के ढेर लग जाते हैं और प्रेम का नशा छा जाता है
हर उदास चेहरे पर यह त्यौहार एक सहज सी मुस्कान ले आता है
सुबह से शाम तक लोग, हर घर हर गली में रंगों से घिरे नजर आते हैं
जहां अपनों पर परायों पर, बेगानों पर अंजानों पर रंग उड़ाते जाते हैं
जहां रंग खत्म हो जाते हैं पर होली का खेल चलता जाता है
जहां धूल मिट्टी और पानी में भी भिगने का मजा आता है
ऐसा भारत देश है मेरा, ऐसा वतन हिन्दुस्तान है
जो दुनया के हर कोने में हर तकनीक की जान है
भारत के बाहर बसने वाले हिन्दुस्तानियों के दिल
आज भी होली के दिन रंगों से मचल जाते हैं
भारत में वे आज नहीं पर जहां हैं वहां अपने सीने में
एक नन्हा भारत बनाकर, वो भी यारो होली मनाते हैं।

-मानव वशिष्ट, हिसार

सदुपयोग

सोशल मीडिया बना मददगार

श्री गुरु जंभेश्वर भगवान ने शब्द 103 में कहा है कि-

'कृष्ण मया तिन्हू लोका साक्षी, अमृत फूल फलीजे।
जोय जोय नाम विष्णु के दीजे, अनंत गुणा लिख लीजे॥

अर्थात् परमात्मा श्रीकृष्ण हमें देना सिखाते हैं, उन्होंने हमें सब कुछ दिया है हमसे लिया कुछ भी नहीं है। उसी प्रकार गुरुदेव ने कहा- तुम भी कुछ देना सीखो। श्री कृष्ण सर्वप्रथम दान स्वरूप अपनी माया को अपने से पृथक कर देते हैं और उस माया को सृष्टि रचने का आदेश देते हैं। वह माया ही एक से अनेक होती हुई संसार के रूप में परिवर्तित होती है तथा अमृत होकर फूलती फलती है। श्री कृष्ण स्वयं परिपूर्ण होते हुए भी हमेशा माया से स्वयं ऊपर बने रहते हैं, जो सभी को दिखता है ऐसा दान परमात्मा का है।

इसलिए गुरु महाराज ने कहा है कि मानवों आप भी कुछ न कुछ देना सीखें। इसी लेनदेन से ही संसार का व्यवहार चलता है किंतु देते समय अहंकार की भावना आ गई तो तुम्हारा दान व्यर्थ हो जाएगा। इसलिए दान विष्णु परमात्मा को अर्पण करके दिया हुआ ही सफल होता है। वही आगे जाकर कृष्ण की माया की तरह ही अमृत, फूल, फल वाला होकर अनंत गुणा हो जाता है। गुरु जम्भेश्वर भगवान ने कहा है कि-

'दान सुपाते बीज सूखेते, अमृत फुल फलीजे'

इसलिए बाहरी गुणों को धारण नहीं करते हुए विष्णु को अर्पण करके कुछ ना कुछ देते रहना ही मुक्ति का परम साधन है।

इसी बात को चरितार्थ करते हुए बिश्नोई समाज के बंधुओं द्वारा सोशल मीडिया के जरिए अच्छी पहल की गई है। जीवन में हमेशा एक ही सिक्के के दो पहलू रहे हैं और दोनों का रास्ता अलग-अलग रहा है जैसे की हार-जीत, सुख-दुख, अच्छा बुरा और अपना- पराया ठीक उसी प्रकार वर्तमान की इस मायावी, स्वार्थी दुनिया में सोशल मीडिया के दिनों दिन बढ़ते हुए दुरुपयोग के बीच में इसी प्लेटफॉर्म से समाज के जरूरतमंद लोगों के लिए हमराह बनकर आर्थिक सहयोग स्वरूप उनके परिवार में एक नई उम्मीदें भरी आशा की किरण जगाई हैं।

सोशल मीडिया के माध्यम से 'जांभाणी आदर्श ग्रुप (वर्तमान नाम जांभाणी आदर्श सेवक दल 29) व जांभाणी आदर्श सेवक दल डोबियाली 'व्हाट्सएप ग्रुप समाज के आर्थिक रूप से कमजोर लोगों की मदद कर रहा है। सोशल मीडिया के बढ़ते दुरुपयोग के कई किस्से रोजाना सामने आते हैं लेकिन कुछ लोग इसका सकारात्मक उपयोग भी कर रहे हैं। इसी बात को चरितार्थ कर रहे है जांभाणी आदर्श सेवक दल 29 व जांभाणी आदर्श सेवक दल डॉबियाली, मुंबई व्हाट्सएप ग्रुप। इन दोनों ग्रुप के सदस्य समाज में आर्थिक रूप से कमजोर और परिवार में आकस्मिक निधन हो जाने पर उस परिवार को सहायता मुहैया करवा रहे हैं। पहले इस ग्रुप के चुनिंदा चयनित सदस्य उस असहाय परिवार के घर जाकर उसका आर्थिक तौर पर मौका मुआयना करते हैं फिर इन ग्रुप में उसकी पारिवारिक हकीकत को रखते हैं और उसके परिचित व्यक्ति का खाता नंबर भी साथ में शेयर करते हुए इस मुहिम को आगे बढ़ाते है। इन दोनों ग्रुप के माध्यम से अभी तक 6 परिवारों को 24 लाख 28 हजार दे चुके है और साथ में 1 परिवार की मुहिम अभी भी जारी है।

इस ग्रुप को शुरू हुए लगभग 18 माह हो चुके है। ग्रुप को प्रारंभ करने का श्रेय विशेष तौर से अपने से दूरदराज बैठे भारतीय सेना के सैनिक, समाज के फौजी भाइयों को जाता है जो हमेशा अपने दिल और दिमाग में राष्ट्र की सेवा के साथ-साथ अपने समाज की चिंता करते हुए उनको उन्नति स्वरूप देखना चाहते हैं। वे शारीरिक रूप से वहां रहते हुए भी अपने समय और राशि का कुछ अंश मानसिक तौर पर अपने समाज को देकर, परिचित भाइयों के साथ इस मुहिम को शेयर करके आगे बढ़ाते रहते हैं। प्रत्येक मुहिम निश्चित समय अवधि के बाद बंद कर दी जाती है, और उनकी राशि उनके परिवार को सुपुर्द कर दी जाती है। राष्ट्र के सैनिक जो कि अपने राष्ट्र को सर्वोपरि रखते हुए कश्मीर, ग्लेशियर से लेकर कन्याकुमारी तक फैले अपने

फौजी भाई नेट बैंकिंग, Paytm व अन्य माध्यमों से इस मुहिम को चला रहे हैं और मैं इस ग्रुप का सदस्य होने के नाते अपने आप को नहीं रोक पाया, तब मैंने अपनी लेखनी से इस पहल को अमर ज्योति तक पहुंचने का रास्ता अपनाया।

मैं इस अमर ज्योति प्रकाशन के माध्यम से समाज के उन सभी वीर सैनिकों को हार्दिक बधाई देता हूं और साथ ही गुरु जंभेश्वर भगवान से प्रार्थना करता हूं कि हमेशा उन जांबाज राष्ट्र प्रेमियों को सुखमय सकारात्मक आशीर्वाद देते हुए इस मुहिम को अनवरत जारी रखने की उर्जा देते रहें।

वर्तमान में इस ग्रुप में फौजी भाइयों के साथ साथ समाज के राज्य कर्मचारी, पेशेवर बन्धु, समाजसेवी लोग निस्वार्थ भावना के साथ बड़े ही उत्सुकता से जुड़कर इस मुहिम को आगे बढ़ाने में अपनी भूमिका अदा कर रहे हैं। ग्रुप को प्रारंभिक दौर में समाज हितैषी, राष्ट्र सैनिक व इस ग्रुप के एडमिन राजाराम खावा भोजासर, श्याम डारा भींयासर, बनवारी जैसला, शिव प्रकाश भंवाल मानेवड़ा, हरलाल खावा रणीसर, सोमराज सियाग चाडी (आर्मी), समाजसेवी किसनाराम, सोहनराम सारण गोवा, भागीरथ बेनीवाल, पप्पू राम खीचड़ इत्यादि लोगों ने जन समूह की सहायता से इस पहल को एक नई दिशा देते हुए लोगों को जोड़ने का काम किया। इस प्रकार आज बिश्नोई समाज के लिए मील का पत्थर साबित होता हुआ जांभाणी आदर्श सेवक दल 29 व बिश्नोई सेवक दल डोबियाली के सभी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सदस्यों के सहयोग से अभी तक इन परिवारों के लिए यह ग्रुप मददगार बना है-

1. आदर्श ग्रुप की प्रथम मुहिम स्वर्गीय श्री श्रवण कुमार जी माल बिश्नोई निवासी सथेरण नोखा जो राजस्थान पुलिस के सिपाही थे, अपनी ड्यूटी करते हुए शहीद हुए थे तब इस ग्रुप के माध्यम से उनके परिवार को 260000 रुपये का सहयोग प्रदान किया गया।

2. द्वितीय मुहिम स्वर्गीय श्री जगमालराम पुनिया गांव पादरड़ी गुडामालानी परिवार के साथ मुकाम जा रहे थे, उनकी सड़क दुर्घटना में दोनों पुत्रों सहित मौत हो जाने पर इस ग्रुप ने 321000 रुपये का आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया।

3. तृतीय मुहिम स्वर्गीय श्री सोनाराम मांजू BSF के जवान जो कि जम्मू में पोस्टेड थे और हार्ट अटैक से देहांत हो गया तब उस पीड़ित परिवार को भी 231000 रुपये सहयोग राशि के रूप में प्रदान किए गए।

4. आदर्श ग्रुप की चतुर्थ मुहिम श्री सागर गोदारा, कानासर जो कि पुलिस विभाग अजमेर में पीलिया से ग्रसित हो गए जिनका इलाज दिल्ली हॉस्पिटल में हुआ, उनका सहयोग करने में सभी नौजवानों ने तकरीबन 11 लाख रुपये का सहयोग किया गया।

5. आदर्श ग्रुप की पंचम मुहिम स्वर्गीय श्री ओम प्रकाश देहडू चाखू फलौदी निवासी का सड़क दुर्घटना में देहांत हो गया। तब आर्थिक मदद के तौर पर उनके परिवार को 255000 रुपये का सहयोग दिया गया।

6. षष्ट मुहिम श्री राजूराम पुत्र श्री रामरख नोखड़ा जिनका स्वास्थ्य खराब हो जाने से निधन हो गया। तब उस परिवार के मासूम बच्चों को सहयोग राशि के रूप में और इस दुख की घड़ी में 261000 रुपये प्रदान किए गए। साथ ही ग्रुप एडमिन श्री सोहन राम सारण युवा बिजनेसमैन हाल गोवा ने दो कमरे बनाकर देने की घोषणा की गई।

7. सप्तम् पहल सांचौर निवासी श्रवण पुत्र श्री बिरदाराम एक अत्यंत निर्धन परिवार का इकलौता चिराग, जो कि अपनी चार बेटियों को मां और दादी के सहारे छोड़कर इस दुनिया से विदा हो गया। अब उनकी यह स्थिति हो रखी है कि वहां उनको देखकर इंसान तो क्या पत्थर के भी आंसू निकलने को आतुर हो जाते हैं।

यह पहल संपूर्ण बिश्नोई समाज में एक नई उमंग और प्रेरणादायी स्रोत बनकर जरूरतमंद लोगों के लिए मील का पत्थर साबित होती दिख रही है। उसमें हम सभी को सहयोग हमेशा के लिए अपेक्षित रहेगा। ऐसे तमाम क्षेत्रों में अपना युवा वर्ग समाज में एक नई ऊर्जा के साथ अपनी निस्वार्थ भावना से काम कर रहे हैं। यह केवल मेरे लिए ही नहीं, संपूर्ण समाज के लिए गौरव का विषय है।

-श्याम चांपाणी गोदारा
ग्राम-सिरमंडी, जोधपुर (भारतीय सेना)
हाल-गुजरात

धरती पर आसन्न संकट का द्योतक बदलता मौसम

शरद ऋतु अपने अवसान पर है। लेकिन बार-बार पश्चिमी विक्षोभ के दस्तक देने एवं वैश्विक स्तर पर मौसम में व्यापक परिवर्तन यह चेताने के लिए काफी है कि धरती पर रहने लायक हालात अब असामान्य होते जा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र की जलवायु परिवर्तन पर हाल ही में प्रकाशित रिपोर्ट से इस बात की पुष्टि होती है कि दुनिया बड़ी ही तीव्र गति से एक बड़े संकट की ओर बढ़ रही है। अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिकों द्वारा तैयार इस रिपोर्ट में दावा किया गया है कि तापमान में आधा डिग्री भी बदलाव का मतलब है ज्यादा जंगलों की आग, सूखा, गरीबी और ग्रेट बैरियर रीफ (करीब 2.5 करोड़ साल से विद्यमान पारिस्थितिकी तंत्र) के 99 प्रतिशत हिस्से का विनाश।

रिपोर्ट में कहा गया है कि अगर ग्लोबल वॉर्मिंग मौजूदा गति से ही जारी रही, तो भविष्य के अनुमानित नुकसान पर अंकुश के लिए जीवनदायिनी धरती पर बसने वालों के पास मुश्किल से एक दर्जन साल ही बचे हैं। ग्लोबल वार्मिंग पर अगर कमी नहीं हो पाई तो उतरी भारत का बड़ा हिस्सा, जहां करोड़ों लोग रहते हैं, इस शताब्दी के अंत तक रहने लायक नहीं रह जाएगा।

अमेरिका, यूरोप तथा एशिया महाद्वीप के कई देशों के न्यूनतम तापमान में गंभीर गिरावट ने वैज्ञानिकों, पर्यावरणविदों तथा आम जनमानस को चिंता में डाल दिया है। अगर भविष्य में स्थिति और बिगड़ी तो मानव जाति के अस्तित्व पर संकट गहरा जाएगा। पिछले दिनों दुनिया के कई देशों में जहां गलाने वाली ठंड पड़ी तो कहीं झुलसा देने वाली गर्मी ने कहर बरपाया। खबरों के अनुसार जनवरी में शिकागो का तापमान शून्य से 50 डिग्री सेल्सियस तक नीचे चला गया। जबकि इसके विपरीत आस्ट्रेलिया में पारा बढ़कर 50 डिग्री तक पहुंच गया। तापमान में इतने बड़े स्तर पर बदलाव का ही नतीजा है कि हाल के दिनों में यूरोप तथा अमरीका में आए बर्फीले तूफान सदी के सबसे भीषण तूफान बताए जा रहे हैं। भारत के कई इलाकों में इस बार न्यूनतम तापमान 40 डिग्री को पार कर गया। इसके अलावा पश्चिमी विक्षोभ के कारण कहीं बारिश के साथ तथा कहीं बिना बारिश बरसे ओलों ने फसलों को काफी नुकसान पहुंचाया। इसके अलावा जनवरी तथा फरवरी महीने में ज्यादातर समय बादल छाए रहने के कारण मौसम के मिजाज में अजीब तरह का परिवर्तन महसूस किया गया।

पर्यावरण असंतुलन के कारण भारत में हालात काफी विकट होते जा रहे हैं। वर्ष 2016 में, वैश्विक पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक(ईपीआई) में भारत को 180 देशों में से 141वें पायदान पर रखा गया था। दो साल बाद भारत 36 पायदान और नीचे गिर गया। 180 देशों में 177वें स्थान पर खड़ा स्वच्छ भारत, निचले पायदान पर पहुंचने की रेस में है और अब इसे दुनिया के सबसे गंदे स्थानों में से एक माना जाता है। संयुक्त राष्ट्र के 'रहने योग्य' के पैमाने पर अधिकतर भारतीय शहर सबसे निचले पायदान पर खड़े नजर आते हैं। मेडिकल जर्नल 'लांसेट' के एक अध्ययन के मुताबिक देश के 89 प्रमुख शहरों में वायु गुणवत्ता खतरनाक स्तर पर है और पिछले साल वायु प्रदूषण जनित 12 लाख मौतों के साथ यह आंकड़ा अपने उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। यह अब शायद ही दोहराने की जरूरत है कि भारत इन दिनों चिंताजनक पारिस्थितिकीय आंकड़ों और दृश्यों से दो-चार है। बेंगलूरू के जलस्तोत्रों में दिखता हानिकारक झाग, हैदराबाद के आसपास की मिट्टी में मौजूद खतरनाक एंटीबायोटिक अवशेषों और रोगाणु, औद्योगिक बेल्ट में लाल रंग की जहरीली नदियां, दूर-दूर तक छाई कोयले की धूल की परत और मध्यप्रदेश में चारों तरफ धुआं तथा अधिकतर महानगरों के बाहर सुलगते और बदबू फैलाते कचरे के विशाल ढेर पर्यावरण के लिए बेहद हानिकारक साबित हो रहे हैं।

बिगड़ते पर्यावरण तथा उसके कारण होने वाले दुष्प्रभावों से संबंधित मामलों में एक और चौंका देने वाला तथ्य सामने आया है। गत 19 फरवरी को गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में जलवायु परिवर्तन पर आयोजित अंतराष्ट्रीय सम्मेलन में कनाडा के वैज्ञानिक प्रो. डेविड ओलसन ने अपने एक

शोध पत्र में दावा किया कि प्रदूषण के कारण भारत में 15 फीसदी बच्चे प्री-मैच्योर डिलीवरी से पैदा हो रहे हैं। जबकि दुनियाभर में यह आंकड़ा 10 प्रतिशत के आस-पास है। प्रो. डेविड के अनुसार समय पूर्व जन्म के कारण ज्यादातर बच्चों में मानसिक विकलांगता, अविकसित शरीर, दिव्यांगता तथा दृष्टिहीनता जैसी विकृतियां तीव्र गति से बढ़ रही हैं (दैनिक जागरण 20 फरवरी 2019)।

पृथ्वी पर बढ़ता पर्यावरणीय असंतुलन भारत समेत दुनिया की सबसे बड़ी समस्या है और एक तरह से यह समस्या मानवीय क्रियाकलापों की देन है। बेशक विकास की धारा को मोड़ा नहीं जा सकता है, लेकिन इसे मानवीय हित में इतना नियंत्रित तो अवश्य ही किया जा सकता है जिससे पृथ्वी पर मंडरा रहे इस गंभीर संकट को दूर किया जा सके। ऐसे विकास का कोई औचित्य नहीं है जिस कारण इंसान का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाए। पृथ्वी मानव के अलावा असंख्य जीव-जंतुओं एवं वन संपतियों का भी घर है। अत: मानव को अपनी करतूतों पर लगाम लगानी चाहिए। इस संदर्भ में महात्मा गांधी का यह कथन विचारणीय है कि ''पृथ्वी के पास मानव की जरूरतों को पूरा करने के लिए काफी कुछ है, लेकिन उसके लोभ को पूरा करने के लिए कुछ भी नहीं है।'' अगर मनुष्य इस तथ्य पर गंभीरता से विचार कर ले तो समस्त मानवता को महाविनाश से बचाया जा सकता है। पर्यावरणीय संगठन की प्रमुख सुनीता नारायण ने कहा है कि ''अब समय आ गया है कि हम अपनी मूर्खता से बाहर निकलें और निश्चित करें कि हमें तीव्र विकास चाहिए या पर्यावरण सुरक्षा।'' कुछ इसी तरह की टिप्पणी दिसंबर 2018 में पोलैंड में जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में प्रकृतिवादी सर डेविड एटनबरो ने की। उन्होंने कहा कि ''अब हम कई प्रजातियों के विलुप्त होने के साथ शायद सभ्यता के अंत की ओर बढ़ रहे हैं।''

धरती को साफ-सुथरा रखने तथा प्रदूषण की भयावहता के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए धीरे-धीरे नई पीढ़ी आगे आ रही है। स्वीडन की युवा ग्रेटा थूनबर्ग (15) पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपने अनूठे अभियान के कारण दुनियाभर में चर्चित हो रही है। वह पिछले छह महीनों से हर शुक्रवार को देश की संसद के सामने धरना दे रही है। इसे देखते हुए जर्मनी समेत यूरोप के कई देशों के बच्चे पर्यावरण संरक्षण की मुहिम को आगे बढ़ाने के लिए शुक्रवार के दिन प्रदर्शन कर रहे हैं। हाल ही में एक समाचार पत्र में छपी रिपोर्ट के अनुसार बेल्जियम में पर्यावरण सुरक्षा को बेहतर बनाने को लेकर 35 हजार विद्यार्थियों ने देशभर में तख्तियां लेकर प्रदर्शन किया। विद्यार्थियों के हाथों में तख्तियों पर जो संदेश लिखे थे वो काफी झकझोर देने वाले थे। एक तख्ती पर लिखा था-नीला आसमान चाहते हो या खून टपकता आसमान। इसी तरह का एक और संदेश-कोई बी प्लानेट नहीं हैं, हमें यहीं रहना है (दैनिक भास्कर 2 फरवरी 2019)।

अत्यधिक गर्मी से उबलती एवं रिकार्ड बनाते न्यूनतम तापमान से जम रही धरती पर जीवन को संरक्षित रखने के लिए हाल ही में पर्यावरण संरक्षण के लिए भारत सरकार द्वारा पदमश्री से सम्मानित की गई झारखंड की जमुना टूडु से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। अपने इलाके में 'वन देवी' और 'लेडी टार्जन' से विख्यात जमुना पिछले 20 साल से जंगल को संरक्षित करने की मुहिम में जुटी है। जमुना देवी न केवल अनाधिकृत तरीके से पेड़ काटने वालों से टकराती है बल्कि अपने क्षेत्र के स्कूलों में जाकर बच्चों तथा महिलाओं को वृक्षों तथा हरियाली की महता के बारे में जागरूक भी करती है (दैनिक जागरण 'संगिनी' 9 फरवरी 2019)। इसी प्रकार राजस्थान के पिपलांत्री गांव का श्याम सुंदर पालीवाल भी अपने इलाके में 'हरियाली का मसीहा' से विख्यात है। वृक्षारोपण को अपने जीवन का लक्ष्य बनाने वाले पालीवाल के प्रयासों से बीते एक दशक में करीब 3 लाख वृक्ष रोपित किए गए हैं जिस कारण उनका पिपलांत्री गांव क्षेत्र में एक हरे-भरे गांव के रूप में मशहूर हो चुका है। पालीवाल अपने गांव में लड़की के जन्म पर 111 पौधे लगाते हैं तथा साथ ही लड़कियों को प्रोत्साहित भी करते हैं कि वे अपनी पैदाइश के समय रोपे गए पौधे की देखभाल करें और उन्हें राखी बांधे (इंडिया टुडे 2 जनवरी 2019)।

-डॉ. मनबीर
शोधार्थी, मोठसरा, हिसार

अ.भा. सेवक दल का हीरक जयंती समारोह: एक झलक

बिश्नोई समाज के अग्रणी संगठन अखिल भारतीय जम्भेश्वर सेवक दल का ऐतिहासिक एवं गौरवपूर्ण पल- हीरक जयंती समारोह दिनांक 8 फरवरी, 2019 को बड़े ही धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। संस्था का समाज सेवा के क्षेत्र में 75 वर्षों का सफल सफर तय करने की खुशी में जगह-जगह विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस आयोजन की मूल भावना संगठन की स्थापना के समय व्यक्त संकल्पों की पूर्ति हेतु किए गए क्रियाकलापों की विवेचना करते हुए विगत में हुई गलतियों से सबक लेना जिससे उनके दोहराव से बचा जाए, रही। एक तरफ जहां विगत की उपलब्धियां वर्तमान में हौसला बढ़ाती हैं, वहीं भविष्य का पथ प्रदर्शन भी करती हैं।

उल्लेखनीय है कि विष्णु स्वरूप गुरु जाम्भोजी की विशेष अनुकम्पा के फलस्वरूप समाज की भलाई की भावना को फलीभूत करते हुए समाज के पुरोधाओं द्वारा दिनांक 8 फरवरी, 1944 को सेवक दल की स्थापना की गई। अत: स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों का विवरण इस प्रकार है-

1. मुकाम- संस्था के प्रशासनिक मुख्यालय मुकाम में इस अवसर पर रात्री जागरण के साथ विशाल हवन पाहल किया गया। इस उपरांत संगठन सचिव श्री रंगलाल सुथार के सान्निध्य में ध्वजारोहण के साथ एक बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें सर्वश्री प्रह्लाद गोदारा, हनुमान दिलोइया, सुभाष जौहर, राजाराम गोदारा, सत्यनारायण, सूर्या, गोपीराम, रामस्वरूप डेलू, श्रवण, उदयपाल, रामचन्द्र पूनिया व अन्य महानुभावों ने सहभागिता की।

2. अबोहर- संस्था के उद्‌गम स्थल श्री बिश्नोई मंदिर, अबोहर में रात्रि जागरण, प्रात:कालीन हवन,

पाहल ध्वजारोहण एवं एक बैठक भी हुई। जिसकी अध्यक्षता श्री निरंजन खिचड़ व सर्वश्री सुल्तान धारणियां, राधेश्याम गोदारा, विष्णु थापन, सुशील बैनीवाल, सुशील सुथार के साथ अन्य सेवकों ने भी भाग लिया।

3. फतेहाबाद- सेवकदल संगठन के हीरक जयंती समारोह के अवसर पर श्री बिश्नोई मन्दिर, फतेहाबाद में राज्य स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कड़ी में प्रात:कालीन विशाल हवन पाहल उपरान्त ध्वजारोहण के साथ-साथ एक बैठक भी आयोजित की गई। जिसमें मुख्य अतिथि श्री दूड़ाराम, पूर्व संसदीय सचिव, हरियाणा सरकार व अध्यक्षता श्री हंसराज गोदारा ने की। इस अवसर पर श्री सहदेव कालीराणा, श्री भूपसिंह गोदारा, श्री प्रदीप बैनीवाल, श्री सुभाष देहडू, सोमप्रकाश सिगड़, बनवारी लाल गोदारा, भूपसिंह कस्वां, प्रवीण

धारणियां, अनिल पूनिया, रामस्वरूप सिहाग, चौथाराम ज्याणी, धौलूराम भादू, जगदीश सुथार, कृष्णदेव पंवार, सत्यनारायण कड़वासरा, बंशी राहड़ के अलावा काफी संख्या में सेवकों ने शिरकत की।

4. गंगानगर– गंगानगर जिले के क्षेत्र में कई कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें मुख्यत: घड़साना एवं रायसिंह नगर है। घड़साना में संगठन के अध्यक्ष श्री रायसिंह कस्वां ने ध्वजारोहण करके बैठक की अध्यक्षता की जिसमें सर्वश्री शिव कुमार खिलेरी, बद्री प्रसाद पंवार, दिलीप धतरवाल के अलावा काफी सदस्यों ने भाग लिया, वहीं रायसिंह नगर में श्री सीताराम मांझू, पूर्व अध्यक्ष ने हवन पाहल उपरान्त ध्वजारोहण एवं बैठक की अध्यक्षता

की। इन बैठकों में सर्वश्री नरसी गोदारा, नरसी डेलू, सीताराम मांजू, हनुमान धारणियां आदि उपस्थित रहे।

–अजमेर गोदारा

महासचिव, अ.भा.ज. सेवक दल

गोवा में गुरु जाम्भोजी पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

16-17 फरवरी, 2019 को गोवा की राजधानी पणजी के हृदय स्थल पर स्थित कला अकादमी के दीनानाथ मंगेशकर सभागृह में 'भक्ति आन्दोलन और गुरु जाम्भोजी: वैश्विक संदर्भ' विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें देश-विदेश के विद्वानों, प्राध्यापकों, लेखकों, शोधार्थियों व श्रोताओं ने भाग लिया। इस सम्मेलन का आयोजन जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर; हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकूला; हिन्दी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय, पणजी और बिश्नोई वेलफेयर ट्रस्ट एवं बिश्नोई सभा, गोवा के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। इस दो दिवसीय सम्मेलन में विभिन्न सत्रों का आयोजन किया गया, जिनका विवरण इस प्रकार है-

उद्घाटन सत्र-

16 फरवरी को प्रात: 10 बजे सम्मेलन का उद्घाटन सत्र आयोजित किया गया जिसमें श्री मदनमोहन गुप्त, अध्यक्ष, मध्यप्रदेश व्यापार संवर्धन बोर्ड ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय, हिसार के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने इस सत्र की अध्यक्षता की। भारत सरकार के आयुष मंत्री श्रीपाद नाईक व मॉरिशस के विख्यात साहित्यकार श्री रामदेव धुरंधर इस सत्र के विशिष्टि अतिथि थे। स्वामी कृष्णानन्द जी आचार्य एवं श्रीमहन्त शिवदास जी के सान्निध्य में अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर सत्र का शुभारम्भ किया। स्वामी सच्चिदानन्द जी, मास्टर सहीराम खिचड़, श्री रामस्वरूप खिचड़ ने तारणहार साखी प्रस्तुत कर गुरु महाराज की चरण वंदना की। हिन्दी विभाग की छात्राओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. वृषाली मांद्रेकर ने विभाग की ओर से तथा श्री बीरबल एम. सहू ने दक्षिण भारत के बिश्नोई समाज की ओर से सभी का हार्दिक अभिनन्दन किया। सम्मेलन संयोजक प्रो. रवीन्द्र नाथ मिश्र ने सम्मेलन की रूपरेखा प्रस्तुत की और सम्मेलन के विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि गुरु जाम्भोजी का चिन्तन वैश्विक था, इसलिए आज उनके विचारों को वैश्विक परिपेक्ष्य में ही देखा जाना चाहिए। श्री रामदेव धुरंधर ने गुरु जाम्भोजी को भक्ति आन्दोलन का पुरोधा बताते हुए उन्हें विश्व को दिशा देने वाले महापुरुष के रूप में याद किया।

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन।

छात्राओं द्वारा स्वागत गीत।

अध्यक्ष प्रो. टंकेश्वर कुमार ने कहा कि गुरु जाम्भोजी के धर्म नियम पूर्णत: वैज्ञानिक हैं और हर काल में उनकी प्रासंगिकता बराबर बनी रहेगी। आपने अगला अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय, हिसार में करवाने का प्रस्ताव रखा। मुख्य अतिथि श्री मदनमोहन गुप्त ने गुरु जाम्भोजी की शिक्षाओं पर सारगर्भित प्रकाश डाला। इस सत्र में पुलवामा के शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई तथा सम्मेलन की स्मारिका, दिल्ली सम्मेलन की पुस्तक और अंग्रेजी में 'खेजड़ली खडाणे'

गोवा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में पुलवामा शहीदों को श्रद्धांजलि।

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में अतिथियों द्वारा पुस्तक विमोचन।

पर लिखी पुस्तक का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया। स्वामी कृष्णानन्द जी आचार्य द्वारा आशीर्वचन दिया गया तथा संयोजन अकादमी के महासचिव डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई ने किया।

प्रथम सत्र–

मध्याह्न 12 बजे सम्मेलन का प्रथम तकनीकी सत्र आयोजित किया गया। इस सत्र में नोखा के विधायक श्री बिहारी लाल बिश्नोई मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए तथा डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, अध्यक्ष हिन्दी एवं संस्कृत विभाग, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) ने सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र में डॉ. आनन्द पाटिल, हिन्दी विभाग, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, तमिलनाडू तथा डॉ. अनिला पुरोहित, सहआचार्या, राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर ने विशिष्ट वक्ता के रूप में अपना योगदान दिया। स्वामी सच्चिदानन्द जी आचार्य, लालासर साथरी, बीकानेर ने आशीर्वचन दिया। इस सत्र का संयोजन जाम्भाणी साहित्य अकादमी की उपाध्यक्षा डॉ. इन्द्रा बिश्नोई, सहआचार्या, राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर ने किया।

द्वितीय सत्र–

इस सत्र में मुख्य अतिथि श्री नीलेश काबराल, ऊर्जा मंत्री, गोवा सरकार; विशिष्ट अतिथि श्री पब्बाराम बिश्नोई, विधायक फलौदी थे। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. एस.

श्री रामदेव धुरंधर

प्रो. टंकेश्वर कुमार

श्री मदनमोहन गुप्त

केन्द्रीय मंत्री श्रीपाद नाईक का सम्मान करते श्री पप्पूराम डारा, सुखराम बोळा व गणपतराम बिश्नोई।

तंकमणि अम्मा, पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनन्तपुरम, केरल ने की। डॉ. आर. सेतुनाथ, प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय, केरल एवं डॉ. संतोष कुमार गुंडप्पा गाजले, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल, महाराष्ट्र इस सत्र के विशिष्ट वक्ता रहे। इस सत्र का संयोजन श्री संदीप धारणियां, संगठन सचिव, जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर ने किया।

तृतीय सत्र–

तृतीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. अमरजीत सिंह वधान, प्रोफेसर, एमरिट्स एवं निदेशक उच्चतर शिक्षा एवं शोध केन्द्र, चण्डीगढ़ ने की। डॉ. रामप्रकाश, प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्रप्रदेश; डॉ. उमेशचन्द्र मिश्र, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, ब्रह्म विद्या मंदिर संस्कृत महाविद्यालय, वृन्दावन, मथुरा (उ. प्र.) एवं डॉ. संगीता जगताप, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कला विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, चिघरुधरा, अमरावती इस सत्र के विशिष्ट वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। इस सत्र का संयोजन डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई, पूर्व वरिष्ठ शोध अधिकारी, प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, बीकानेर (राज.) ने किया।

श्री बिहारीलाल बिश्नोई

स्वामी कृष्णानंद जी

श्री पब्बाराम बिश्नोई

श्री नीलेश काबराल श्री किशनाराम बिश्नोई श्री गिरीश चोंडाकर

चतुर्थ सत्र–

17 फरवरी को प्रात: 9 बजे आयोजित चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता डॉ. बाबूराम, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी ने की। विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ. सत्यपाल बिश्नोई, कृषि वैज्ञानिक, राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुरा, जयपुर; डॉ. प्रकाश पार्रेकर, अध्यक्ष, कोंकणी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय तथा श्री विजयपाल बघेल, प्रसिद्ध पर्यावरणविद्, गाजियाबाद (उ. प्र.) उपस्थित थे। स्वामी सत्यदेवानन्द जी, हरिद्वार ने अपने आशीर्वचन दिया। इस सत्र का संयोजन डॉ. छायारानी बिश्नोई, प्रवक्ता (हिन्दी), दयानन्द आर्य कन्या महाविद्यालय, मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश) ने किया।

पंचम सत्र–

इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. ब्रह्मानन्द, पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) ने की। प्रो. सी. जयशंकर बाबू, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, पांडिचेरी; डॉ. अशोक सभ्रवाल, पूर्व अध्यक्ष एवं एसो. प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ और डॉ. भूषण भावे, भूतपूर्व उपाध्यक्ष, कोंकणी अकादमी, गोवा सत्र के विशिष्ट वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। इस सत्र का संयोजन डॉ. मनमोहन लटियाल, शिक्षा विभाग, दिल्ली ने किया।

षष्ठम सत्र–

इस सत्र के मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. कृष्ण कुमार कौशिक, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, जामियामिलिया इस्लामिया वि.वि., दिल्ली भूमिका निभाई। डॉ. भंवर सिंह सामौर, सदस्य, केन्द्रीय साहित्य अकादमी (राजस्थानी प्रकोष्ठ) ने इस सत्र की अध्यक्षता की। श्री गिरीश चोंडाकर, अध्यक्ष, गोवा कांग्रेस इस सत्र में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। इस सत्र के विशिष्ट वक्ता डॉ. वीना बिश्नोई, प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार; डॉ. पी.एच. इब्राहिम कुट्टी, सह-आचार्य, हिन्दी विभाग, श्री शंकराचार्य संस्कृत वि.वि., कालडी, केरल; डॉ. ज्योति मंत्री, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, केशरबाई लाहोटी महाविद्यालय, अमरावती एवं श्री आर. के बिश्नोई, कोषाध्यक्ष, जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर उपस्थित रहे। इस सत्र का संयोजन मास्टर मूलाराम, सचिव, जाम्भाणी साहित्य अकादमी ने किया।

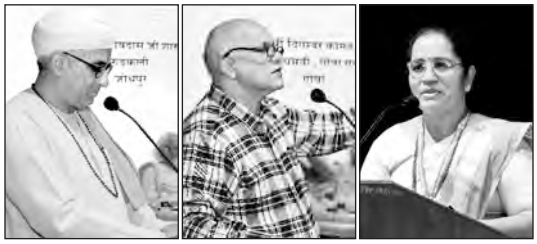

श्रीमहंत शिवदास शास्त्री श्री दिगंबर कामत प्रो. वृषाली मांद्रेकर

समापन सत्र–

17 फरवरी को सायं 4 बजे आयोजित समापन सत्र के मुख्य अतिथि श्री दिगम्बर कामत, पूर्व मुख्यमंत्री, गोवा सरकार थे। इस सत्र की अध्यक्षता श्री किशनाराम बिश्नोई, विधायक-लोहावट ने की। समापन सत्र में श्री रामदेव धुरंधर, सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं पूर्व सम्पादक, महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस विशिष्ट अतिथि के रूप में तथा डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई सारस्वत अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस सत्र में श्रीमहन्त शिवदास जी शास्त्री, रूड़कली, जोधपुर द्वारा आशीर्वचन दिया गया तथा गोवा के प्रमुख समाजसेवी एवं उद्योगपति श्री मोहन लाल गोदारा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। अकादमी के उपाध्यक्ष डॉ. बनवारी सहू ने संगोष्ठी की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। इस सत्र का संयोजन बिश्नोई वेलफेयर ट्रस्ट गोवा के चेयरमैन श्री गणपत राम बिश्नोई ने किया। समापन सत्र में स्वामी कृष्णानन्द

विशेष सहयोग के लिए श्री मोहनलाल गोदारा, गोवा व श्री बीरबल एम. सहू, हुबली का सम्मान

आचार्य, डॉ. वृषाली मांद्रेकर, संयोजक प्रो. रवीन्द्र नाथ मिश्र ने भी संगोष्ठी की उपलब्धियों एवं आयोजन पर प्रकाश डालते हुए सभी का आभार प्रकट किया।

इन मुख्य सत्रों के अतिरिक्त चार सामान्तर सत्र भी आयोजित किए गए जिनमें डॉ. मीना रानी, जयपुर; डॉ. ऊषा रानी शिमला; डॉ. लक्ष्मी पाण्डे, सागर; डॉ. वाई.सी. मेंढे, अमरावती; डॉ. राकेश, हिसार; डॉ. बंसी लाल ढाका, बाड़मेर; श्री उदयराज खिलेरी, जालौर; सूबेदार केहराराम, सांचौर; श्री जयकिशन सहारण, सांचौर; डॉ. योगिता बिश्नोई, हिसार; श्री अनिल कुमार, चण्डीगढ़ वि.वि.; श्री मोहनलाल बिश्नोई, चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय; श्रीमती मिलन बिश्नोई, तमिलनाडू विश्वविद्यालय; डॉ. तनुजा चौधरी, जबलपुर एवं डॉ. श्वेता गोवेकर, गोवा विश्वविद्यालय सहित गोवा के अनेक महाविद्यालयों के प्राध्यापकों और देश भर के विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्राधयापकों व शोधार्थियों ने अपने पत्र प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर समाजसेवी श्री राजाराम धारणियां, सेवक दल के अध्यक्ष श्री रामसिंह कस्वां, पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम मांजू, बिश्नोई सभा, हिसार के प्रधान श्री प्रदीप बैनीवाल, महासभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री रामस्वरूप मांजू, उपाध्यक्ष श्री हुकमाराम खिचड़, हिसार सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री सुभाष देहडू, महासभा शाखा हिसार के अध्यक्ष श्री सहदेव कालीराणा, मुम्बई ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री जालाराम लोहमरोड़, मुम्बई युवा संगठन के अध्यक्ष श्री सत्येन्द्र सहू, श्री पप्पूराम डारा ठेकेदार (जोधपुर), श्री सुखराम बोला ठेकेदार (जोधपुर), श्री बद्रीप्रसाद कालीराणा (म.प्र.), श्री प्रदीप बिश्नोई (मुरादाबाद), श्री किशनलाल लोहमरोहड़ (अहमदाबाद), श्री मोहनलाल लोहमरोड़ (रोटू), श्री भजनलाल लोळ (सूरत), श्री अमरचन्द बिश्नोई (भीलवाड़ा), श्री मोहनलाल डूडी (पूना), श्री ठाकराराम खिलेरी (तेलंगाना), श्री कृष्ण जाजूदा (डबवाली), श्री सुरेन्द्र गोदारा (पंजाब), श्री शिवकुमार सहारण (गंगानगर), श्री शिवराज जाखड़ (जीव रक्षा प्रदेशाध्यक्ष), श्री मांगीलाल बूड़िया (जोधपुर) सहित अनेक सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारी एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

सम्मेलन में पधारे सभी विद्वान वक्ताओं ने गुरु जाम्भोजी की शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार पर बल दिया। उन्होंने माना कि गुरु जाम्भोजी की शिक्षाएं आज के समय में सबसे अधिक प्रासंगिक हैं और उन्हें विद्यालयों/महाविद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए तथा उन पर शोधकार्य भी होना चाहिए। सम्मेलन में स्थानीय बन्धुओं ने विशेष योगदान दिया व सराहनीय प्रबंधन किया।

-डॉ. सुरेन्द्र बिश्नोई
महासचिव, जाम्भाणी साहित्य अकादमी

गोवा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में उपस्थित श्रोतागण।

बिश्नोई समाज के प्रमुख धाम

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

सम्वत् 2075 फाल्गुन की अमावस्या

लगेगी-05.03.2019, मंगलवार, सायं 07.06 बजे

उतरेगी-06.03.2019, बुधवार, रात्रि 09.33 बजे

सम्वत् 2076 चैत्र की अमावस्या

लगेगी-04.04.2019, गुरुवार, दोपहर 12.50 बजे

उतरेगी-05.04.2019, शुक्रवार, अपराह्न 2.20 बजे

जांभाणी मेले

फाल्गुन अमावस्या मेला - मुकाम, सम्भराथल, पीपासर, सोनड़ी, लोहावट, मेघावा, कांठ, वोढा:
बुधवार, 06.03.2019

होली पाहळ: गुरुवार, 21.03.2019

चैत्र अमावस मेला, जाम्भोळाव, लोदीपुर:
शुक्रवार, 05.04.2019

उनतीस धर्म नियम

- तीस दिन सूतक रखना।
- पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक् रहना।
- प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
- शील का पालन करना व संतोष रखना।
- बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
- द्विकाल संध्या-उपासना करना।
- संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
- निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
- पानी, ईंधन और दूध को छान कर प्रयोग में लेना।
- वाणी विचार कर बोलना।
- क्षमा-दया धारण करना।
- चोरी नहीं करनी।
- निन्दा नहीं करनी।
- झूठ नहीं बोलना।
- वाद-विवाद का त्याग करना।
- अमावस्या का व्रत रखना।
- विष्णु का भजन करना।
- जीव दया पालणी।
- हरा वृक्ष नहीं काटना।
- काम, क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
- रसोई अपने हाथ से बनानी।
- थाट अमर रखना।
- बैल बधिया नहीं कराना।
- अमल नहीं खाना।
- तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
- भांग नहीं पीना।
- मद्यपान नहीं करना।
- मांस नहीं खाना।
- नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

RNI No. : 12406/57
POSTAL REGD. NO. : L/Regd. NP/HSR/01/2017-2019
L/WPP/HSR/03/17-19

POSTAGE PREPAID IN CASH
POSTED AT : HISAR H.O.
POSTING DATE : 1st OF EVERY MONTH

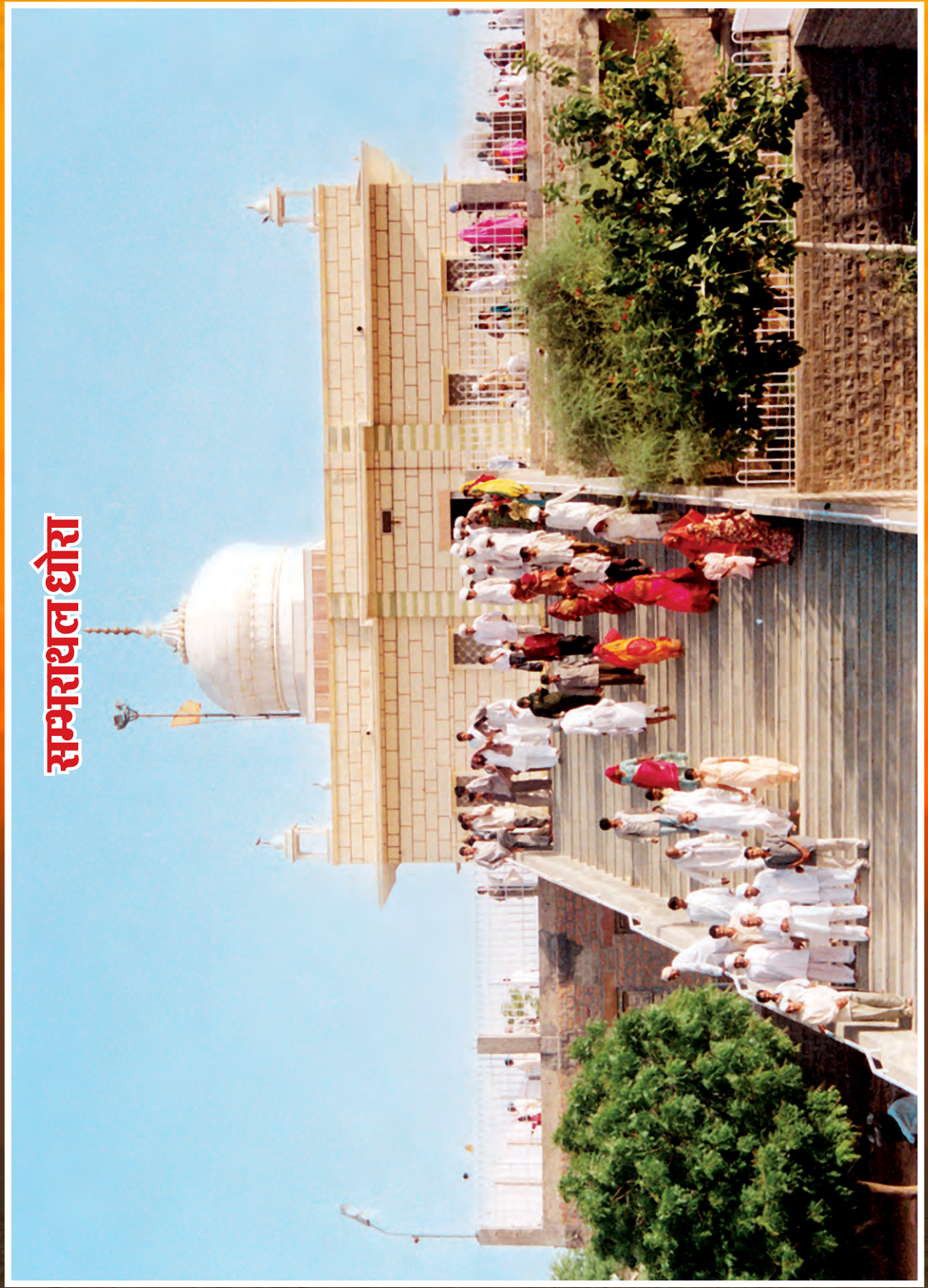

मुद्रक, प्रकाशक प्रदीप बैनीवाल, प्रधान, बिश्नोई सभा, हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 मार्च, 2019 को मुख्य डाकघर, हिसार से प्रेषित किया।

DOREX Printers 9896011117